एमपीईडीए न्यूज़लेटर

खंड - IV / संख्या - 10/ जनवरी, 2017

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
एम पी ई डी ए भवन, पनम्पिल्ली एवेन्यू, कोच्चि - 682 036, केरल, भारत
फोनः +91 484 2311979 फैक्सः +91 484 2313361
ईमेलः ho@mpeda.gov.in वेबसाइटः www.mpeda.gov.in

CPF-TURBO PROGRAM

The shrimp industry has seen major developments and tasted success over the years, And not only are we proud to be part of it, but also take pride in pioneering it. To ensure the success and profitability of the Indian Shrimp Industry, our highly determined team with committed Aquaculture specialists constantly provide the shrimp farmers with access to the latest and updated technology.

CPF-TURBO PROGRAM -
Pioneering Successful and Profitable Shrimp Aquaculture

एमपीईडीए न्यूज़लेटर

खंड IV / संख्या 10 / जनवरी, 2017

विषय सामग्री

विपणन समाचार

5 डॉ. ए जयतिलक भा प्र से इन्फोफिश के नए अध्यक्ष

7 बंगाल मत्स्य मेला, 2017 में एमपीईडीए

संकेंद्रित क्षेत्र

10 नवंबर, 2016 के दौरान भारत के चुने हुए बन्दरगाहों में मछलियों के अवतरण की प्रमुख विशेषताएँ

18 नेटफिश द्वारा मछुवारों के लिए पाराद्वीप में चिकित्सा शिविर का आयोजन

19 अलंकारिक मत्स्य पालन को बढ़ाने के लिए एमपीईडीए का जागरूकता अभियान

23 सुंदरबन कृस्ती मेलाओ लोको संस्कृति उत्सब एक रिपोर्ट

जलचर दृश्य

24 एमपीईडीए के क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा अक्वाकल्चर में प्रशिक्षण कार्यक्रम और अभियान

26 "उत्तरदायित्व पूर्ण श्रिम्प फ़ार्मिंग और अक्वाकल्चर के विविधीकरण" पर श्रिम्प कृषकों का सम्मेलन

29 कोचीन में आयोजित हरितोत्सवम, 2016 में एमपीईडीए द्वारा भाग लेना

30 आंध्र प्रदेश में आयोजित राष्ट्रीय युवा दिवस के दौरान एमपीईडीए द्वारा डिजिटल भुगतान पर अभियान आयोजित

31 समाचार स्पेक्ट्रम

बंगाल मत्स्य मेला, 2017 में एमपीईडीए

नेटफिश द्वारा मछुवारों के लिए पाराद्वीप में चिकित्सा शिविर का आयोजन

सुंदरबन कृस्ती मेला-ओ- लोको संस्कृति उत्सब - एक रिपोर्ट

"उत्तरदायित्व पूर्ण श्रिम्प फ़ार्मिंग और अक्वाकल्चर के विविधीकरण पर" श्रिम्प कृषकों का सम्मेलन

आंध्र प्रदेश में आयोजित राष्ट्रीय युवा दिवस के दौरान एमपीईडीए द्वारा डिजिटल भुगतान पर अभियान आयोजित

इस प्रकाशन में विद्वत्तापूर्ण लेखों में उल्लेख किए गए विचार लेखकों के अपने दृष्टिकोण है और एमपीईडीए के विचारों का उनसे कोई सरोकार नहीं है। इस प्रकाशन में विद्वत्तापूर्ण लेखों में दी गई सूचनाओं की वास्तविकता का उत्तरदायित्व लेखक पर निहित है। उसके लिए न तो एमपीईडीए और न ही संपादक मण्डल उत्तरदाई होंगे।

अस्थिर वैश्विक वातावरण में निर्यातकों के लिए एक सरल सुरक्षा का उपाय।

A simple safety measure for exporters. In an uncertain global environment.

आर्थिक अस्थिरता के इस समय में निर्यात के अनुकूल ईसीजीसी के साथ ऋण जोखिम का बीमा कराएं।

In these times of economic instability, insure against credit risk with ECGC's export-friendly credit risk policies.

अधिक जानकारी के लिए ईसीजीसी के निकटतम कार्यालय से संपर्क करें।
For more information contact your nearest ECGC office.

ADVT. NO. : NMD/202/214

ISO 9001: 2008 Certified

Insurance is the subject matter of solicitation.
IRDA Regn.No.124
CIN No. U74999MH1957GO1010918

ईसीजीसी लि.
(पूर्व में भारतीय निर्यात ऋण गारंटी निगम लिमिटेड)
(भारत सरकार का उद्यम)
पंजीकृत कार्यालयः एक्सप्रेस टावर्स, 10वीं मंजिल, नरीमन पाईन्ट,
मुंबई-400 021, भारत. टेलीः 6659 0500 / 6659 0510,
फैक्सः (022) 6659 0517. टोल फ्रीः 1800-22-4500.
ईमेलः marketing@ecgc.in ● वेबसाइटः www.ecgc.in

ECGC Ltd.
(Formerly Export Credit Guarantee Corporation of India Ltd)
(A Government of India Enterprise)
Registered Office: Express Towers, 10th Floor, Nariman Point,
Mumbai - 400 021, India. Tel: 6659 0500 / 6659 0510.
Fax: (022) 6659 0517. Toll-free: 1800-22-4500.
e-mail: marketing@ecgc.in ● Website: www.ecgc.in

आप निर्यात पर ध्यान केंद्रित करें. हम जोखिमों से रक्षा प्रदान करेंगे ● *You focus on exports. We cover the risks.*

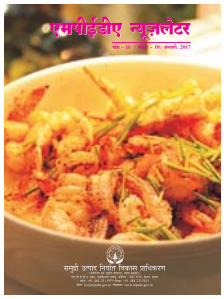

छायाचित्र का श्रेय
डॉ के वी प्रेमदेव, उप निदेशक (सांख्यिकी)

संपादक मण्डल
श्री बी श्रीकुमार
सचिव
श्रीमती आशा सी परमेश्वरन
संयुक्त निदेशक (क्यू सी)
श्री अनिल कुमार पी
उप निदेशक (जलजीव)
डॉ टी आर जिबिन कुमार
उप निदेशक (पी और एम पी)

संपादक
डॉ राम मोहन एम के
संयुक्त निदेशक (एम)

मुद्रक एवं प्रकाशक
श्री बी श्रीकुमार
सचिव द्वारा
समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
एम पी ई डी ए भवन, पनम्पिल्ली एवेन्यू,
कोच्चि - 682 036 के लिए प्रकाशित
फोन : 91 484 2311979
ईमेल : support@mpeda.gov.in

प्रकाशक:
एम पी ई डी ए भवन
पनम्पिल्ली एवेन्यू
कोच्चि - 682 036

सहायक संपादक
श्रीमती दिव्या मोहनन के एम
कनिष्ठ लिपिक

कवर डिजाईन
डॉ टी आर जिबिन कुमार
उप निदेशक (पी और एम पी)

मुद्रित
प्रिंट एक्सप्रेस
44/1469 ए, अशोका रोड,
कलूर, कोच्चि - 682 017

आप के लिए.....!!

प्रिय मित्रों,

नव वर्ष का प्रारंभ होते ही समुद्री उत्पाद निर्यात पर सकारात्मक रिपोर्ट आने लगा है। मुझे पूरी आशा है कि यह बढ़त पूरे वर्ष भर और आगे भी बना रहेगा। वर्ष 2017-18 के यूनियन बजट में भी एमपीईडीए के लिए बेहतर फंड आबंटन का शुभ समाचार भी मिला है।

यद्यिप, व्यापार और मॉनिटरिंग, नियंत्रण और निगरानी उपायों के रूप में हमें नई तकनीकी बाधा का सामना करना पड़ रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपने समुद्री खाद्य आयात मॉनिटरिंग कार्यक्रम के अंतर्गत 1 जनवरी, 2018 से उनके देश में पहुँचने वाले सभी समुद्री खाद्य परेषणों पर सम्पूर्ण मत्स्यहरण रिपोर्ट की आवश्यकता के बारे में सूचित किया है। यह पकडी जाने वाली मत्स्य का पता करने के लिए और कुछ मत्स्यों के आयात को खत्म करने हेतु तथा कुछ मत्स्यों और मत्स्य उत्पादों, जिसकी रिपोर्ट न करने और अनियंत्रित (आईयूयू) मत्स्य हरण या समुद्री खाद्य धोखाघड़ी होने के कारण गैर कानूनी होने का खतरा बना रहता है, के बारे में सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है। कृषि किए जाने वाले श्रिम्प को इस अधिसूचना की परिधि में शामिल नहीं किया गया है, लेकिन यह उम्मीद की जा रही है कि जब संयुक्त राज्य अमेरिका में घरेलू अक्वाकल्चर आधारित श्रिम्प का पता लगाने की सूचना स्थापित हो जाने पर बिना विलंब के इसे भी शामिल कर लिया जाएगा।

इस अधिसूचना के अंतर्गत, निर्यातकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे मत्स्यन जहाजों या अक्वाकल्चर फार्मों की सूचना प्रस्तुत करें जहां से उन्होंने निर्यात के लिए कच्चा माल प्राप्त किया है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इससे हमें दस्तावेज़ तैयार करने के लिए और अधिक प्रयास करना पड़ेगा, जिससे मूल्य बढ़ जाएगा। हालांकि इससे हमारे सिस्टम में भी सुधार हो जाएगा; और आयातक और निर्यातक दोनों की मांगों को एक साथ पूरा करने के लिए एमपीईडीए श्रिम्प फार्मों का पता लगाने के लिए उसके नामांकन के वास्ते सक्रिय रूप से प्रयास में लगा है।

हमें यह सूचना मिली है कि सऊदी अरब ने वाईट स्पॉट बिमारी के होने की वजह से भारत के कुछ राज्यों से प्राप्त किए गए जीवित/ प्रशीतित और हिमकृत श्रिम्प के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया है। लेकिन देश ने पकाए हुए श्रिम्प को आयात के प्रतिबंध से छूट दिया है। एमपीईडीए का यह मानना है कि बिना कोई वैज्ञानिक आधार के इस प्रकार का निर्णय बहुत ही विभेदकारी है और उस देश को किए जाने वाले हमारे श्रिम्प निर्यात के लिए एक व्यापारिक बाधा है। इस प्रकार के प्रतिबंध को देश में कृषि किए जाने वाले प्रजातियों और वनस्पतियों की जैविक सुरक्षा उपाय के भाग के रूप में होने का वे दावा कर रहे हैं, लेकिन इससे अवश्य व्यापारिक प्रतिरोध उत्पन्न हो जाता है।

इन उपायों से यह साबित हो जाता है कि अधिकतर देश आसानी से प्रक्रिया किए जाने वाले उत्पादों को लक्ष्य करते रहता है। समय की आवश्यकता है कि हमें आगे बढ़ना होगा और निर्यात हेतु खाने के लिए बिलकुल तैयार ऐसे उत्पादों को तैयार करना होगा। इस संबंध में हमें यह संकल्प करना होगा कि इस वर्ष हम अपना उत्पादन का लक्ष्य कच्चे माल से हटाकर विभिन्न खुरदुरे बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए परिष्कृत और मूल्य वर्धित उत्पाद तैयार करने पर केन्द्रित करेंगे।

शुभ कामनाओं के साथ

जनवरी 2017
कोच्चि 36

डॉ. ए. जयतिलक भा प्र से
अध्यक्ष

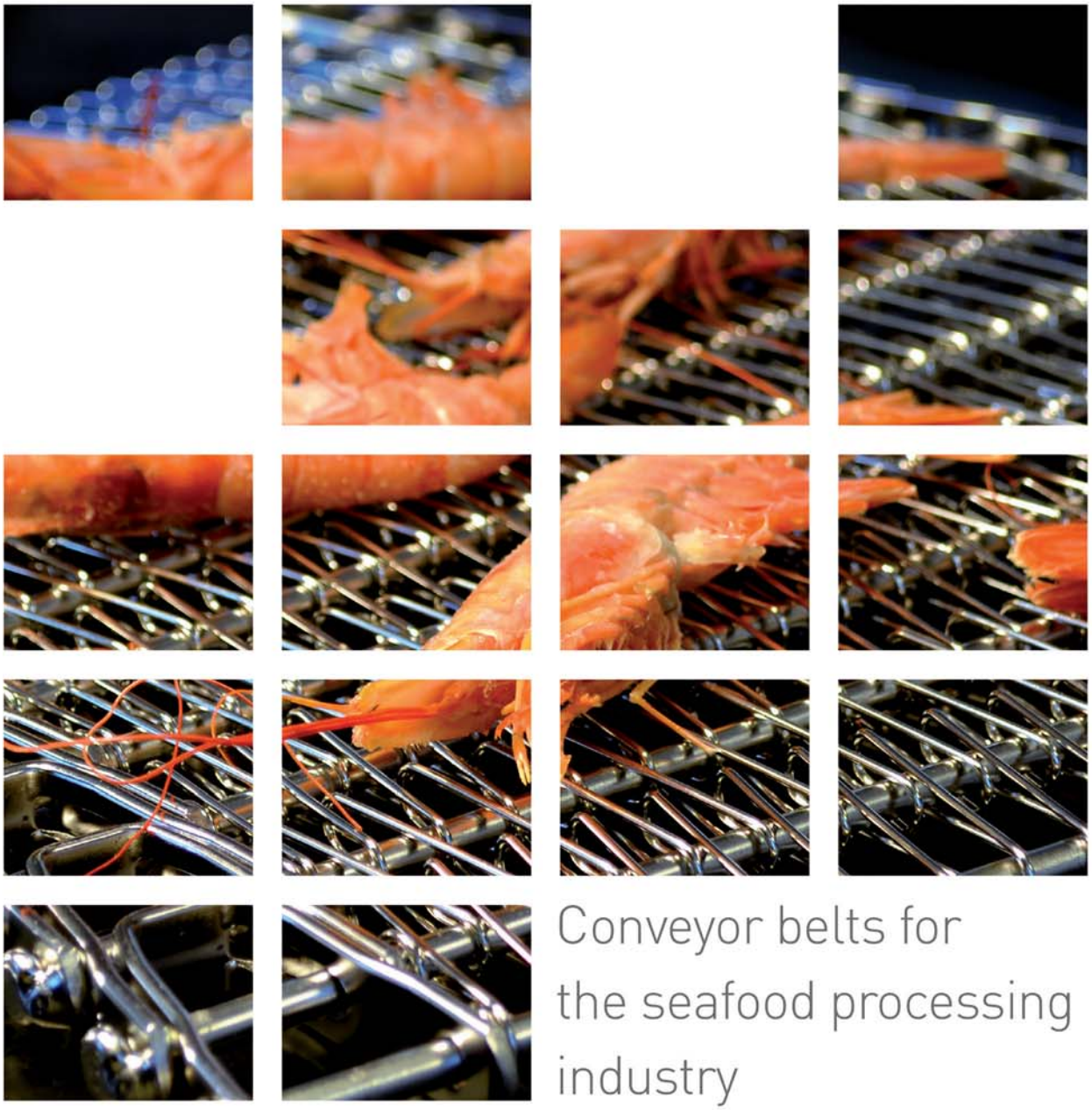

Conveyor belts for the seafood processing industry

Costacurta conveyor belts are used in food processing as well as in many other industrial processes. Thanks to the specific experience gained over more than 60 years, Costacurta can assist the client in the selection of the most suitable type of belt for the specific application. Costacurta conveyor belts are suitable for applications with temperatures ranging from -150°C to +1150°C.

tcb@costacurta.it
www.costacurta.it

VI CO Costacurta

डॉ. ए जयतिलक भा प्र से इन्फोफिश के नए अध्यक्ष

भारत सरकार ने एमपीईडीए के अध्यक्ष डॉ. ए जयतिलक भा प्र से को इन्फोफिश, क्वाला लम्पूर, मलेशिया के नए अध्यक्ष के रूप में नामांकित किया है, जो एशिया और पेसेफिक क्षेत्र में मत्स्य उत्पादों के विपणन सूचना और तकनीकी सलाह देने वाली एक अंतर सरकारी संगठन है। इन्फोफिश की पुत्राजया लम्पुर, मलेशिया में आयोजित 31 वीं प्रशासकीय काउंसिल की बैठक में इन्फोफिश के पूर्व अध्यक्ष फ़िजी के कमांडर सनलिया वितौ नकाली ने अध्यक्षता औपचारिक रूप से भारत को हस्तांतरित किया।

क्वालालांपुर में वर्ष 1985 में एफ़एओ द्वारा आयोजित एक सम्मेलन में लिए गए निर्णय के अनुसार इन्फोफिश की स्थापना हुई थी, जो मार्च 1987 में अपना कार्य आरंभ किया। इन्फोफिश के कुल तेरह सदस्य देश है जो बांग्लादेश, कम्पोडिया, फ़िजी, भारत, ईरान, मलेशिया, मालदीव, पाकिस्तान, पापुआ न्यू गिनिया, फिलीपींस, सोलमन आईलैंड्स, श्रीलंका और थायलैंड आदि है।

इन्फोफिश एशिया पैसफिक देशों के मत्स्य उत्पादकों और निर्यातकों को खरीदारों और बेचने वालों के बीच वार्तालाप, वर्तमान और दूरगामी विपणन सूचना, तकनीकी सलाह और विशेष सेवायें आदि के लिए विपणन सुविधायें प्रदान करने वाला एक प्रमुख स्रोत है। प्रदर्शनियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं, सेमिनारों और प्रशिक्षण कक्षाओं के आयोजन के अलावा इन्फोफिश सदस्य राज्यों के बीच मत्स्य पकड़ने से पहले, पकड़ते समय और पकड़ने के बाद के मामलों पर परामर्श देने का कार्य भी करता है।

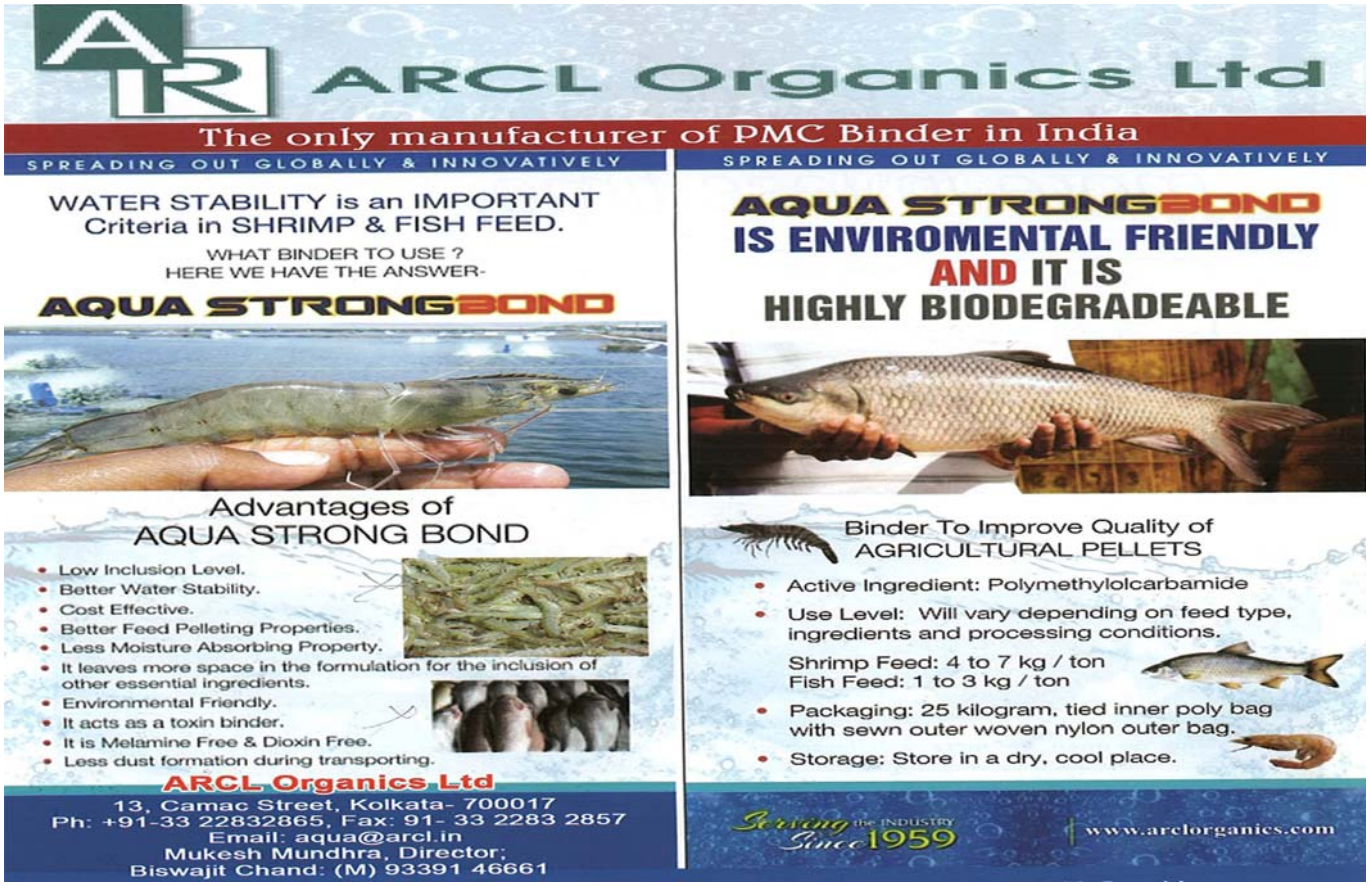

Looking for the perfect Metal Detection solution for all your seafood needs?

The **ASN 9000** is ideal for high quality food production environments, offering a range of versatile, space saving conveyorised solutions for in-process and end of line inspection in a variety of seafood products.

+ Brand Protection

Regardless of products being wet, dry, hot, chilled or frozen, the **ASN 9000** has Profile technology to provide **ultimate metal detection capability**.

+ Compliance

ASN 9000 metal detection systems meet the IFS (International Food Standard), BRC (British Retail Consortium), SQF 2000 (Safe Quality Food) and FSSC 22000 food standards.

+ Cost Reduction

ASN 9000 offers optimsed operational efficiency and better sensitivity to detect metal contaminants.

+ Increasing Productivity

Your production processes are optimised with **ASN 9000** which increases operational efficiency and reduces the potential for lost production.

For more information on ASN 9000 metal detection solutions or to download your **free** white paper **"Enhancing Levels of Due Diligence: Exceeding Standards In The Food Industry "** visit

www.mt.com/pi-asn9000-seafood

For more information, contact

Toll Free **1800 22 8884 & 1800 10 26460**

sales.mtin@mt.com

METTLER TOLEDO

बंगाल मत्स्य मेला, 2017 में एमपीईडीए

बंगाल मत्स्य मेला, 2017 का आयोजन 6 से 8 जनवरी, 2017 तक नलबान फूड पार्क, कोलकोता में पश्चिम बंगाल के मत्स्य विभाग और इंडियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। यह मत्स्य मेला पश्चिम बंगाल के मत्स्य उद्योग के कार्यकलाप को प्रदर्शित करने और इस क्षेत्र में और अधिक निवेश को आकर्षित करने के लिए किया गया था।

इस मेले का उद्घाटन 6 जनवरी को पश्चिम बंगाल के माननीय पंचायत और ग्राम विकास मंत्री श्री सुब्रता मुखर्जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर माननीय मत्स्य उद्योग मंत्री श्री चन्द्र नाथ सिन्हा, माननीय ए आर डी व एम एस एम ई मंत्री श्री स्वपन देबनाथ, माननीय उपभोक्ता मामले और स्वयं सहायता दल व स्वरोजगार मंत्री श्री साधन पांडे, पश्चिम बंगाल के माननीय पर्यटन राज्य मंत्री श्री इंद्रनील सेन, बिधाननगर के माननीय मेयर श्री सब्यसाची दत्ता, भारत सरकार, कृषि मंत्रालय के एस एफ़ ए सी के प्रबंध निदेशक श्री सुमन्ता चौधरी और पश्चिम बंगाल सरकार के माननीय मुख्य मंत्री

एमपीईडीए के स्टाल में दर्शक

जापान के प्रतिनिधि मण्डल के साथ एमपीईडीए/ आरजीसीए अधिकारी एमपीईडीए के स्टाल में

विपणन करने वालों और खरीदारों की बैठक

OCEANBLUE

Total Solutions for Shrimp Processing factories !

SALE

Evaporation Condenser

Evaporation Condenser

Condensing Coil

Air Cooler (CABERO)

Evaporating Coil (SS tube & Al fin)

Evaporating Coil (Cu tube & Al fin)

Plate Contact Freezer

Manual Sliding Door

Ammonia Pump (Hermetic)

Valves (JZZL)

SALE

Grading Machine

Washing Machine

Cooking Machine(Water&Steam)

Aluminium (SS) Pan (Tray)

Breading machine (Line)

Tunnel Powder Coating Machine

Shrimp Fryer

Automatic Pan separating Conveyor

Shrimp Peeler

Contact Window:

Mr. Shawn Wang
0086-18660021004
shawnn@live.cn

Mr. Orient Yang
0086-18653549849
yang20131003@live.com

OCEAN BLUE (HK) DEVELOPMENT LIMITED
16/F, Kowloon Building, 555 Nathan Road,
Mongkok, Kowloon, HongKong

के कृषि एवं संबधित विभाग के सलाहकार श्री पी के मजूमदार आदि उपस्थित रहे। कई कंपनियों और व्यापारिक घरानों, मत्स्य पालन विश्वविद्यालय और संस्थानों के प्रतिनिधि और अन्य कई हितधारक भी इस समारोह में उपस्थित रहे।

बहुत भारी भीड़ के समक्ष मत्स्य पालकों, मत्स्य सहकारी समितियों, मत्स्य क्षेत्र के विभिन्न फील्ड के सीएफ़सीएस आदि, जिन्होंने इस क्षेत्र में उत्तम प्रदर्शन किया है, को अवार्ड देकर सम्मानित किया गया। सबसे अधिक निर्यात करने के लिए मेसर्स मैगनम एक्स्पोर्ट्स, कोलकोता को भी अवार्ड प्रदान किया गया।

राज्य के विभिन्न भागों से तथा जापान, वियतनाम, कंबोडिया, थाईलैंड, म्यांमार, बांग्लादेश और यूनाइटेड अरब अमीरात आदि देशों से आए मत्स्य कृषक/मछुआरे/ हित धारक, आईसीसी के अध्यक्ष आदि की उपस्थिति से उद्घाटन समारोह वास्तव में काफी रंगारंग हो गया था।

एमपीईडीए ने इस प्रदर्शनी में 18 वर्ग मीटर का एक प्रदर्शनी स्थान लिया। आरजीसीए के सहयोग से कोलकाता स्थित एमपीईडीए के क्षेत्रीय कार्यालय ने प्रदर्शनी की व्यवस्था की। एमपीईडीए के स्टाल में चार बड़े बड़े अक्वेरियम में जेनेटिक रूप से विकसित फार्म तिलापिया और मेंग्रोव क्रैब शामिल जीवित जलीय जीवों को दर्शाया गया। मत्स्य कृषक, मत्स्य विभाग के अधिकारी, हितधारक और अन्य लोगों ने एमपीईडीए के स्टाल का दौरा किया। एमपीईडीए द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की प्रदर्शिनी और बिक्री भी की।

इस मत्स्य मेले के साथ साथ एमपीईडीए ने टोकियो स्थित अपने व्यापार उन्नयन कार्यालय के माध्यम से जापानी खरीदारों के लिए बेचने वालों और खरीदारों के बीच बैठकों का भी आयोजन किया। इस व्यापार बैठक में जापान, वियतनाम, कंबोडिया, थाईलैंड, म्यांमार, बांग्लादेश और यूनाइटेड अरब अमरात आदि 6 देशों के 35 खरीदारों ने भाग लिया। इस व्यापार बैठक में 77 से अधिक निर्यातक भी उपस्थित रहे।

एमपीईडीए के स्टाल में पश्चिम बंगाल के मत्स्य विभाग के अधिकारियों के साथ एमपीईडीए/आरजीसीए के अधिकारी

विज्ञापन टैरिफ

एमपीईडीए न्यूज़ लेटर

प्रत्येक पृष्ट के लिए दर

अंतिम कवर पृष्ट	(रंगीन)	₹ 7200/-	यू एस डॉलर 160
भीतरी कवर पृष्ट	(रंगीन)	₹ 6000/-	यू एस डॉलर 135
भीतरी पृष्ट	(रंगीन)	₹ 4000/-	यू एस डॉलर 90
भीतरी आधा पृष्ट	(रंगीन)	₹ 2000/-	यू एस डॉलर 45

एक वर्ष (12 माह) या उससे अधिक के कांट्रैक्ट विज्ञापन के लिए दस प्रतिशत छूट दिया जाएगा। विज्ञापन के लिए सामग्री विज्ञापन दाता को जे पी ई जी या पी डी एफ़ फॉर्मेट या सी एम वाई के मोड में प्रदान करना होगा।

मेकेनिकल आंकड़े : सीजे : 27 x 20 से.मी.
मुद्रण : ऑफसेट (बहुरंगीन)
प्रिंट क्षेत्र : पूरा पृष्ट : 23 x 17.5 से.मी.
आधा पृष्ट : 11.5 x 17.5 से.मी.

विवरण के लिए संपर्क करें :
उप निदेशक (पी & एम पी)/ संपादक, एमपीईडीए न्यूज़लेटर
एमपीईडीए हाउस, पनम्पिल्ली एवेन्यू, कोचीन - 36
फोन : +91-484-2321722, 2311979
टेलेफैक्स : +91-484-2312812
ईमेल : newslet@ mpeda.gov.in, pub@mpeda.gov.in

नवंबर, 2016 के दौरान भारत के चुने हुए बन्दरगाहों में अवतरित मछलियों के विवरण

संगीता एन आर, अफजल वी वी, नीतू एन जे व जोइस वी थॉमस, नेटफिश, एमपीईडीए

भूमिका

एमपीईडीए के मत्स्यहरण प्रमाणीकरण के भाग के रूप में नेटफिश भारत के पूर्वी और पश्चिमी तट के बन्दरगाहों में नौकाओं के आगमन और मत्स्य के अवतरण के संबंध सूचनाओं को रिकॉर्ड करते हैं। देश के 9 समुद्री राज्यों के 46 प्रमुख बंदरगाहों और अवतरण केन्द्रों पर (सारणी1) जहाज के आगमन और मछली के अवतरण के आंकड़ों की रिकार्डिंग करके नेटफिश भारतीय तट के आस पास पकड़ी जाने वाली मछलियों को मॉनिटर करता है। इस प्रकार एकत्र किए गए आंकड़ों को पकड़ी गई मत्स्यों के प्रजातिवार, राज्यवार, क्षेत्र वार और बंदरगाहवार मूल्यांकन के लिए एम एस ऑफिस (एक्सेल) पर प्रक्रिया की जाती है। यह रिपोर्ट नवंबर, 2016 के दौरान भारत के मुख्य बन्दरगाहों पर अवतरित मत्स्यों के आंकड़ों पर प्रकाश डालती है।

तालिका 1 आंकड़े एकत्रित करने के लिए चयन किए गए बन्दरगाह और अवतरण केंद्र

क्र. सं.	राज्य	बन्दरगाह
1	केरल	बेपोर
2		पुतियाप्पा
3		तोप्पुंपड़ी
4		मुनंबम
5		शक्तिकुलंगरा
6		तोट्टंपल्ली
7		कायमकुलम
8		विषिन्जम
9	कर्नाटक	मैंगलोर
10		मालपे
11		गंगोली
12		तडरी
13		कारवार
14		होन्नावर
15	महाराष्ट्र	हरने
16		न्यू फेरी वार्फ
17		रत्नगिरी (मिरकरवाडा)
18		सासोन डॉक
19	गुजरात	वेरावल
20		पोरबंदर
21		मंगरोल
22	पश्चिम बंगाल	दीघा (शंकरपुर)
23		देशप्रान
24		नमखाना
25		सुल्तानपुर
26		काकद्वीप
27		रायदिघी
28	उड़ीशा	पाराद्वीप
29		बलरामगढ़ी
30		बहाबलपुर
31		धमारा
32	आंध्र प्रदेश	विशाखापटनम
33		काकीनाड़ा
34		मछलीपटनम
35		निज़ामपटनम
36	तमिल नाडु	चेन्नै
37		पज़्हैयार
38		नागपट्टिणम
39		तूतूकुडी
40		कडलूर
41		मंडपम
42		चिन्नमुट्टम
43		कोलाचाल
44		पांडिचेरी
45		करईकल
46	गोवा	कटबोना

अवतरण के आधार पर आकलन

नवंबर, 2016 के दौरान देश भर के चुने गए 46 अवतरण स्थानों पर कुल मिलाकर 1,04,157.92 टन मछलियाँ अवतरीत हुई, जिनमें मुख्य रूप से पेलाजिक फिनफिश की मात्रा अधिक रही और यह 59,327 टन (57%) रही। डिमेरसल फिनफिश की भागीदारी 22,565 टन (22%) की रही, जबकि कुल पकड़ी गई मछलियों में से शेलफिश की मात्रा 22264.54 टन (21%) की रही। (चित्र1)

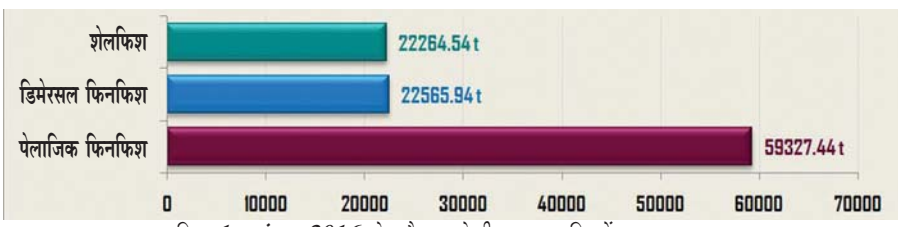

चित्र 1 नवंबर, 2016 के दौरान श्रेणी वार मछलियों का अवतरण

माह के दौरान रिकॉर्ड की गई कुल 113 प्रकार की मछलियों में से प्रथम पाँच प्रजातियों की भागीदारी लगभग 53,233.19 टन (51%) की रही, जिनमें सबसे ऊपर इंडियन ऑइल सारडीन, इंडियन मेकेरेल, स्क्विड, कटलफिश और रिबन फिश रही (चित्र 2 देखें)। शेष 108 प्रजातियों के थे जिनमें डस्की फिन्ड बुल्सआई, जापनीस थ्रेड बिन ब्रीम, हॉर्स मेकेरेल आदि की 2500 टन से अधिक मात्रा की महत्वपूर्ण भागीदारी रही। बार्ब्ड़ हाफ़बीक नामक प्रजाति सबसे कम मात्रा में पकड़ी गई (0.05 टन)

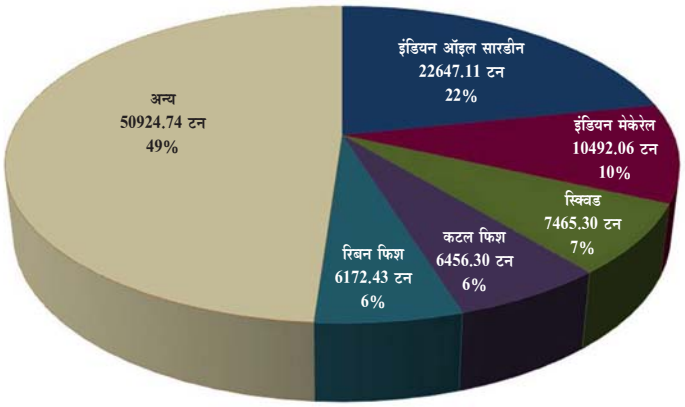

चित्र: 2 नवंबर, 2016 के दौरान अवतरित प्रमुख मदें

माह के दौरान रिकॉर्ड किए गए विभिन्न पेलाजिक, डिमेरसल और शेलफिश की मदें सारिणी 2 में प्रस्तुत की गई है। अवतरित पेलाजिक फिनफिश में जिन प्रजातियों की सबसे अधिक भागीदारी रही वे थीं इंडियन ऑइल सारडीन (22,647.11 टन) और इंडियन मेकेरेल 10492.06 टन)। पेलाजिक के अवतरण में रिबन फिश की भी अच्छी भागीदारी रही (6,172.43 टन)

डिमेरसल फिनफिश में डस्की फिन्ड बुल्सआई और ब्लड कलर्ड बुल्सआई दोनों की भागीदारी कुल 7603.62 टन की रही। क्रोकर्स और जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम की भागीदारी भी क्रमशः 3105.67 टन और 2739.42 टन की रही। शेलफिश स्टॉक में से अवतरित मोल्लुस्कान की मात्रा 14,621.53 टन रही, जो कुल अवतरित क्रस्टासियन्स की मात्रा (7,643.02 टन) से दोगुनी थी।

क्रस्टासियन अवतरण में मुख्य भाग पेनाईड श्रिम्प की थी और यह 6,841.81 टन की रही, जिनमें से करिक्काड़ी श्रिम्प की मात्रा सबसे अधिक (2,036.08 टन) रही। शेलफिश अवतरण में मोल्लुस्कान्स जैसे स्क्विड और कटलफिश की प्रमुखता रही और यह क्रमशः 7,465.30 टन और 6456.30 टन की भागीदारी रही।

तालिका 2. नवंबर, 2016 के दौरान विभिन्न मछलियों के प्रजातियों की श्रेणीवार लैंडिंग

मछली का मद	*मात्रा टन में*	*कुल अवतरण का %*
पेलाजिक फिन फिश		
इंडियन ऑइल सारडीन	22647.11	21.74
इंडियन मेकेरेल	10492.06	10.07
रिबन फिश	6172.43	5.93
स्काड्स	2778.66	2.67
हॉर्स मेकेरेल	2509.03	2.41
टूना	2453.60	2.36
लेदर जैकेट	2388.10	2.29
सीयर फिश	1639.45	1.57
एंचोवीस	1363.05	1.31
ट्रिवालीस	1147.05	1.10
लेस्सेर सारडीन्स	1124.42	1.08
बॉम्बे डक	1061.44	1.02
स्नैप्पर	706.18	0.68
बरक्कुडास	618.56	0.59
हेरिंग्स	483.19	0.46
हिल्सा	292.38	0.28
क्वीन फिश	287.93	0.28
सैल फिश	271.83	0.26
डोलफ़िन फिश	230.81	0.22
हाफ बीक्स	160.08	0.15
ओरियंटल बोनिटो	110.00	0.11
मरलिन्स	103.20	0.10
कोबिया	69.46	0.07
मुल्लेट	57.25	0.05
सी बास	38.54	0.04
फ्लेट नीडिल फिश	36.96	0.04
इंडियन इलिशा	20.93	0.02
इंडियन साल्मन	18.57	0.02
रेनबो रन्नर	17.80	0.02
सिल्वर सिल्लागो	15.16	0.01
मिल्क फिश	8.90	0.01
इंडियन थ्रेड फिश	3.35	0.00
कुल	59327.44	56.96
डिमेरसल फिन फिश		
बुल्स आई	7603.62	7.30
क्रोकर्स	3105.67	2.98
जापनीस थ्रेड फिन ब्रीम	2739.42	2.63
कैट फिश	1870.58	1.80
रीफ़ कोड्स	1707.47	1.64
लिजार्ड फिश	1702.61	1.63
पोम्फ़ेट्स	1321.09	1.27
सोल फिश	825.09	0.79
ईल	455.55	0.44
गोट फिश	452.94	0.43
मून फिश	254.49	0.24
रेस	184.10	0.18

घोल	73.78	0.07
पोनी फ़िशेस	71.89	0.07
एम्परर ब्रीम	57.23	0.05
व्हाइट स्नेपर	42.05	0.04
व्हिप फिन सिल्वर बिड्डी	39.76	0.04
लॉन्ग स्पाईन सी ब्रीम	14.60	0.01
पैरट फिश	13.82	0.01
स्पाइन फूट्स	12.35	0.01
गिटार फिश	5.70	0.01
ट्रिगर फिश	5.00	0.00
इंडियन हालिबट	3.05	0.00
टाइगर पेर्च	1.70	0.00
स्पेड फिश	1.50	0.00
येलो फिन सी ब्रीम	0.75	0.00
फाइल फिश	0.16	0.00
कुल	22565.94	21.67
शेल फिश		
क्रस्टासियन्स		
पेनाइड़ श्रिम्प	6841.81	6.57
समुद्री कैब	553.84	0.53
पेनाइड़ श्रिम्प से भिन्न	103.55	0.10
लोबस्टर	90.03	0.09
मड कैब	53.80	0.05
कुल क्रस्टासियन्स	7643.02	7.34
मोल्लुस्कस		
स्क्विड	7465.30	7.17
कटल फिश	6456.30	6.20
ऑक्टोपस	699.93	0.67
कुल मोल्लुस्कस	14621.53	14.04
कुल शेलफिश	22264.54	21.38
कुल पकड़ी गई	104157.92	100.00

क्षेत्र वार अवतरण।

क्षेत्र के आधार पर अवतरण के आंकड़ों का आकलन करते हुए (चित्र 3) यह देखा गया है कि सबसे अधिक 48,941.14 टन (कुल अवतरित में से (47%) दक्षिण पश्चिमी तट पर रिकॉर्ड किया गया है, जिसमें केरल, कर्नाटक और गोवा राज्यों में फैले चयन किए गए 15 अवतरण स्थानों से था। उत्तर पश्चिम के महाराष्ट्र और गुजरात के 7 चयन किए गए क्षेत्र की भी अच्छी भागीदारी रही और वहाँ से कुल पकड़ी गई में से 40,637.74 टन (39%) का अवतरण हुआ। इस प्रकार माह के दौरान कुल अवतरित मात्रा का 86% दक्षिण पश्चिम और उत्तर पश्चिम में रिकॉर्ड किया गया।

पूर्वी तट पर उडीशा और पश्चिम बंगाल के 7 अवतरण स्थानों पर कुल अवतरण 10,608.68 टन (10%) की हुई और सबसे कम भागीदारी तमिलनाडू और आंध्रा प्रदेश में हुई जहां पर 14 बन्दरगाहों पर अवतरण केवल 3970.36 टन (4%) की ही रही।

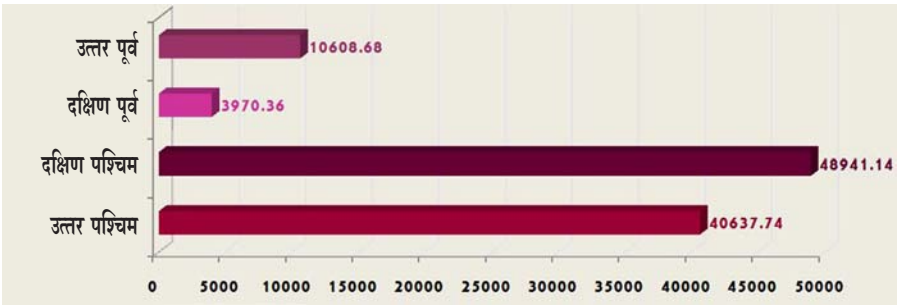

चित्र - 3 नवम्बर, 2016 के दौरान रिकॉर्ड किए गए क्षेत्रवार अवतरण

दक्षिण पश्चिम और उत्तर पश्चिम दोनों क्षेत्रों में अवतरण में पेलाजिक फिनफिश की अधिकता रही। माह के दौरान दक्षिण पश्चिम में अवतरित पेलाजिक फिनफिश की मात्रा अप्रत्याशित रूप से अधिक रही। (चित्र 4 देखें) इसके विपरीत उत्तर पूर्व और दक्षिण पूर्व में अवतरण में पेलाजिक फिनफिश के मुक़ाबले शेलफिश की मात्रा अधिक रही; जो भी हो, भिन्नता का कोई ज्यादा महत्व नहीं है। माह के दौरान उत्तर पश्चिम को छोडकर सभी क्षेत्रों में डिमेरसेल फिनफ़िश के अवतरण सबसे कम रिकॉर्ड की गई।

प्रत्येक क्षेत्र में अवतरण में जिन मत्स्य के मदों की प्रमुखता रही उसे तालिका 3 में दर्शाया गया है। दक्षिण पश्चिम, उत्तर पश्चिम और दक्षिण

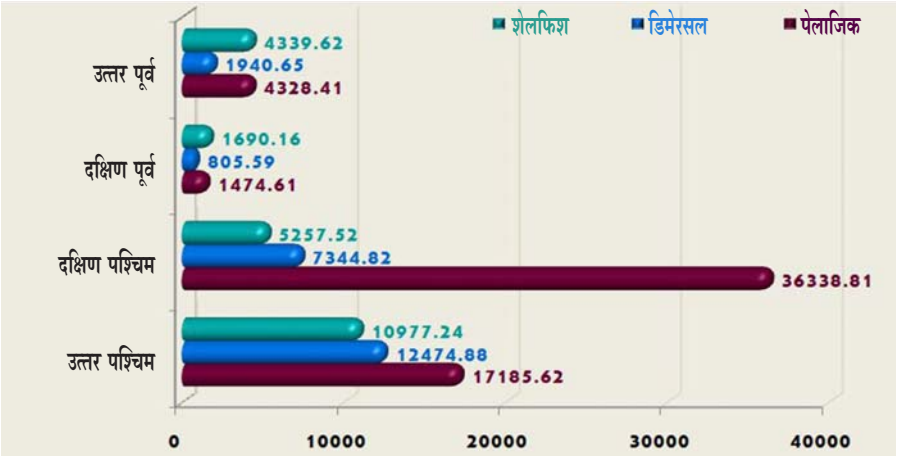

चित्र 4 कुल अवतरण में से प्रत्येक क्षेत्र के श्रेणीवार भागीदारी (टन में) की तुलना

पूर्व में अवतरण होने वाले 5 मुख्य मदों में सबसे अधिक स्क्विड और कटलफिश थी। प्रतिशत के हिसाब से स्क्विड की मात्रा 4 से 12 प्रतिशत तक रही और सबसे अधिक मात्रा उत्तर पश्चिम क्षेत्र में रिकॉर्ड किया गया। दक्षिण पश्चिम, उत्तर पश्चिम और उत्तर पूर्व क्षेत्रों में हुए अवतरण में इंडियन मेकेरेल की प्रमुखता रही (7% से 12% तक), जिसमें से सबसे अधिक मात्रा दक्षिण पश्चिम से रिकॉर्ड किया गया। उत्तर पश्चिम, दक्षिण पूर्व और उत्तर पूर्व तटों पर अवतरित कुल मात्रा में रिबन फिश की मात्रा 6-8% रही। दक्षिण पश्चिम तटों पर इंडियन ऑइल सारडीन का अवतरण अभूतपूर्ण रूप से बहुत अच्छी रही, जबकि अन्य क्षेत्रों से इसकी मात्रा केवल 130 से 1500 टन तक ही रिकॉर्ड की गई। दक्षिण पश्चिम और उत्तर पश्चिम क्षेत्रों में अवतरित डस्की फिन्ड बुल्सआई की मात्रा प्रत्यक्ष रूप से बहुत अधिक थी और माह के दौरान पूर्वी तट के पास इस प्रजाति का कोई रिकॉर्ड नहीं देखा गया।

राज्यवार अवतरण

नवंबर, 2016 में कर्नाटक में सबसे अधिक समुद्री मछलियाँ पकड़ी गई (35,097.24 टन)

तालिका : 3 नवंबर, 2016 के दौरान प्रत्येक क्षेत्र में अवतरित प्रमुख मदें

मद	मात्रा टन में	क्षेत्र की कुल लैंडिंग में से
दक्षिण पश्चिम		
इंडियन ऑइल सारडीन	20527.85	41.94
इंडियन मेकेरल	5975.31	12.21
बुल्सआई डस्की फिन्ड	2864.89	5.85
स्क्विड	2087.30	4.26
कटल फिश	1883.07	3.85
उत्तर पश्चिम		
स्क्विड	4875.897	12.00
कटलफिश	3858.079	9.49
इंडियन मेकेरेल	3547.360	8.73
रिबन फिश	3384.465	8.33
बुल्सआई डस्की फिन्ड	2320.300	5.71
दक्षिण पूर्व		
कटलफिश	510.415	12.86
स्क्विड	253.545	6.39
रिबन फिश	245.635	6.19
टूना	209.200	5.27
पूवालन श्रिम्प	198.440	5.00
उत्तर पूर्व		
करिक्काडि श्रिम्प	1364.299	12.86
क्रोकर	960.311	9.05
डीप सी श्रिम्प	834.518	7.87
इंडियन मेकेरेल	807.113	7.61
रिबन फिश	747.881	7.05

जो कुल पकड़ी गई मछलियों का 34% था। उसके बाद का स्थान गुजरात और महाराष्ट्र का रहा, जहां पर क्रमशः 25,655.15 टन (25%) और 14,982.60 टन (14%) की पकड़ रही। कुल अवतरण में से इन तीनों राज्यों में कुल 73% मछलियां पकड़ी गई। पूर्वी तट पर पश्चिम बंगाल में सबसे अधिक पकड़ रिकॉर्ड की गई (7522.53 टन)। आंध्र प्रदेश में सबसे कम पकड़ (1169.15 टन) रिकॉर्ड की गई।

नवंबर, 2016 के दौरान प्रत्येक राज्य में अवतरण में जिन पाँच मत्स्य मदों की प्रमुखता रही, उसके विवरण तालिका 4 में दिया गया है। 5 समुद्री राज्यों में सबसे अधिक जिन मछलियों की पकड़ रिकॉर्ड की गई मुख्य मदों में थीं इंडियन मेकेरेल, इंडियन ऑइल सारडीन और रिबन फिश। कर्नाटक राज्य में इंडियन ऑइल सारडीन काफी अधिक मात्रा में पकड़ी गई और यह कुल पकड़ की 54% रही। गोवा में पकड़ी गई मछलियों में 60% से अधिक इंडियन मेकेरेल की थी। गुजरात, महाराष्ट्र, केरल और तमिल नाडु में स्क्विड का स्थान राज्य के पहले पाँच मदों में रही जबकि कटल फिश गुजरात, केरल और तमिलनाडू में मुख्य मदों में रही। पूर्व के तटीय राज्यों में, विशेषकर आंध्र प्रदेश, उडीसा और पश्चिम बंगाल में श्रिम्प का स्थान प्रमुख मदों में रही।

बंदरगाहवार अवतरण

आंकड़े एकत्रित करने के लिए चयन किए गए 46 बन्दरगाहों में से 22 पश्चिमी तट के और 24 पूर्वी तट के थे। पश्चिमी तट और पूर्वी तट से हुए बंदरगाहवार अवतरण क्रमशः चित्र 6 और 7 में दर्शाया गया है। गुजरात के वेरावल बन्दरगाह में सबसे अधिक 10,852.34 टन (10%) अवतरण दर्ज किए गए।

दूसरा और तीसरा स्थान क्रमशः होन्नावर और

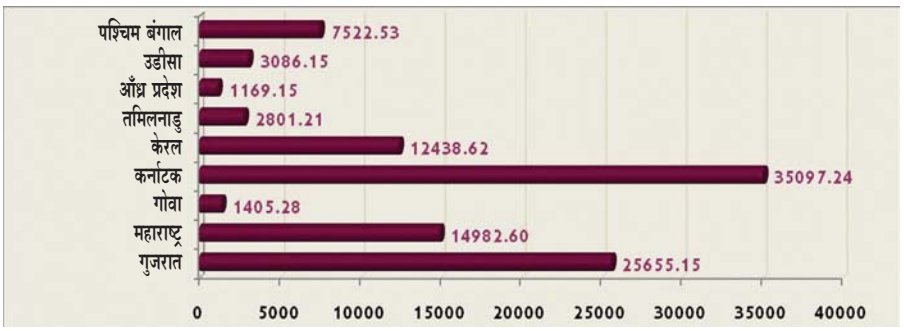

चित्र-5 नवम्बर, 2016 के दौरान राज्यवार मत्स्य अवतरण (टन में)

www.salemmicrobes.com

Shrimp Hatchery - Shrimp Farming - Fish Hatchery - Fish Farming

"Through technology, innovation and our strong commitment to product quality and service, we aim to help Aqua farmers to accomplish their goal of good production with maximum return on investment"

SALEM MICROBES PRIVATE LIMITED

(An I S O 9001: 2008 certified company)

Regd. Off : No. 21/10C, Bajanai Madam Street, Gugai, Salem - 636 006. Tamilnadu. India.
Customer Care : 91 +427 + 2469928 / 94432 46447 | E-Mail : salemmicrobes@yahoo.co.in

तालिका : 4. नवंबर, 2016 के दौरान विभिन्न राज्यों में अवतरित प्रमुख मदें

मद	मात्रा टन में	राज्य के लैंडिंग का कुल प्रतिशत
केरल		
बुल्स आई ब्लड कलर्ड	1828.30	14.70
स्क्विड	1241.05	9.98
इंडियन ऑइल सारडीन	1180.21	9.49
इंडियन मकेरेल	1150.76	9.25
कटलफिश	1103.29	8.87
कर्नाटक		
इंडियन ऑइल सारडीन	19044.34	54.26
इंडियन मेकेरेल	3972.05	11.32
बुल्स आई डस्की फिन्ड	2864.89	8.16
रिबन फिश	1242.41	3.54
लयांग स्काड़	996.52	2.84
गोवा		
इंडियन मकेरेल	852.50	60.66
इंडियन ऑइल सारडीन	303.30	21.58
टूना	129.60	9.22
हॉर्स मेकेरेल	42.90	3.05
नीडिल फिश	34.90	2.48
महाराष्ट्र		
इंडियन मकेरेल	3238.26	21.61
हॉर्स मेकेरेल	2039.53	13.61
इंडियन ऑइल सारडीन	1458.96	9.74
स्क्विड	1377.90	9.20
डीप बोडीड सार्डीनेल्ला	674.35	4.50
गुजरात		
कटलफिश	3647.00	14.22
स्क्विड	3498.00	13.63
रिबन फिश	3107.00	12.11
बुल्स आई डस्की फिन्ड	2320.30	9.04
जापनीस थ्रेड फिन ब्रीम	2135.50	8.32
तमिल नाडु		
कटल फिश	488.55	17.44
स्क्विड	228.05	8.14
इंडियन स्काड़	139.81	4.99
इंडियन ऑइल सारडीन	138.82	4.96
रिबन फिश	126.04	4.50
आंध्रा प्रदेश		
पिंक श्रिम्प	150.88	12.91
टूना	133.45	11.41
रिबन फिश	119.60	10.23
समुद्री कैब	83.26	7.12
फ्लॉवर प्रोन	81.47	6.97
उड़ीसा		
करिक्काड़ी श्रिम्प	518.26	16.79
रिबन फिश	505.52	16.38
क्रोकर	411.09	13.32
कैट फिश	173.43	5.62
पूवालन श्रिम्प	153.39	4.97
पश्चिम बंगाल		
करिक्काड़ी श्रिम्प	846.04	11.25
डीप सी श्रिम्प	834.52	11.09
इंडियन मेकेरेल	702.48	9.34
क्रोकर	549.22	7.30
बॉम्बे डक	537.31	7.14

पोरबंदर बन्दरगाह का रहा जहां पर 9828.45 टन और 9777.31 टन मछलियों का अवतरण हुआ। पूर्वी तट पर सबसे अधिक अवतरण देशप्रान बन्दरगाह पर हुआ, जिसका योगदान 3252.60 टन रहा। 46 अवतरण स्थानों में से 22 पर 1000 टन से अधिक अवतरण दर्ज किए गए, जिनमें से 18 बन्दरगाह पश्चिमी तट के और शेष पूर्वी तट के थे। सबसे कम अवतरण केरल के विज़िंजम बन्दरगाह पर हुई (25.24 टन)।

तुलनात्मक विश्लेषण

नवंबर माह के आंकडों की तुलना सितंबर और अक्तूबर के आंकड़ों के साथ तालिका 6 में प्रस्तुत की गई है। नवंबर माह में मछलियों की कुल पकड़ में अक्तूबर के मुक़ाबले 5600 टन की कमी हुई है। नवंबर माह के दौरान पेलेजिक फिनफिश के अवतरण में 4 की वृद्धि हुई है, उसके अनुसार शेलफिश और डिमेरसल फिनफिश के अवतरण में कमी आई है। कर्नाटक में पकड़ी गई विविध मत्स्य मद में इंडियन ऑइल सारडीन सबसे ऊपर बनी रही और सबसे अधिक बार अवतरण दर्ज किया गया। मछलियों के अवतरण के मामले में सभी राज्यों में कर्नाटक प्रथम स्थान पर बना रहा। अवतरण के मामले में सबसे अधिक अवतरण गुजरात के वेरावल बन्दरगाह पर हुआ और वह पहले स्थान पर बना रहा, लेकिन महीने के दौरान प्रतिशत में कमी दर्ज की गई। नवंबर माह में जहाज के कुल अवतरण में कमी हुई और अक्तूबर के मुक़ाबले लगभग 3700 जहाज़ कम दर्ज किया गया है।

जहाजों के आगमन के आधार पर आकलन

कुल मिलाकर चुने हुए बन्दरगाहों में माह के दौरान कुल 35,597 जहाजों के अवतरण दर्ज

WORLD'S MOST ADVANCED MULTI-FUNCTIONAL TUNNEL FREEZER

- Multi-functional Quick Tunnel Freezer, from 250 to 1,500 Kgs/h, including Infeed conveyor, glazer (spraying/dip), Hardener, synchronized automatic control system for full-line, can freeze all kinds of products (IQF, Head-On in boxes, Nobashi, Breaded, etc.).
- Contact Plate Freezer 500 to 1,500 Kgs/Shift.
- Water Chiller 3,000 to 10,000 Ltrs/h, Insulated water tank and falling film unit.

Contact: B. S. Sankara Rao
Mobile: +91 9866674760, +91 8978334062
B. S. ENGINEERING SERVICES
[Refrigeration & Engineering works]
Visakhapatnam, India.
E-mail: bsee.vizag@gmail.com

MECHANICAL & THERMAL WORKS

GLORY CO., LTD.
Leading in Freezing Equipment
Ho Chi Minh City, Vietnam.
E-mail: info@glory.vn

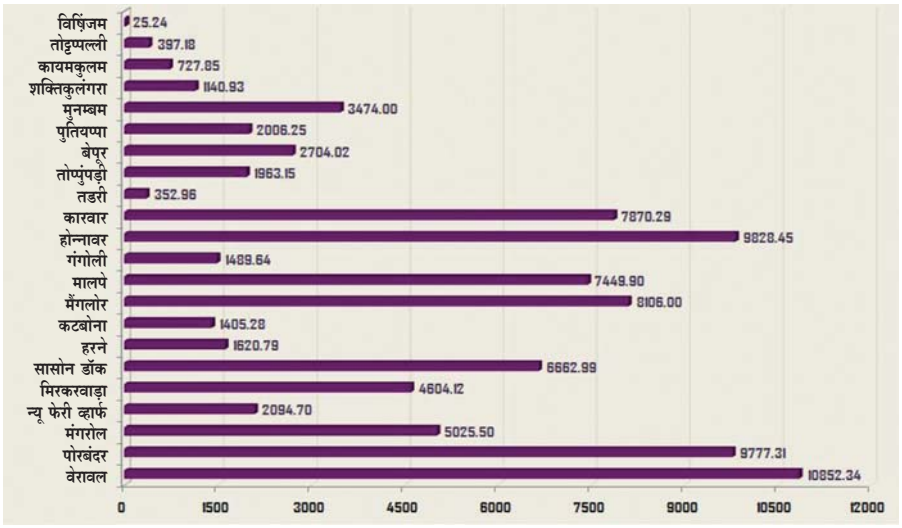

चित्र 6-नवंबर, 2016 के दौरान पश्चिमी तट में स्थित बन्दरगाहों में अवतरण (टन में)

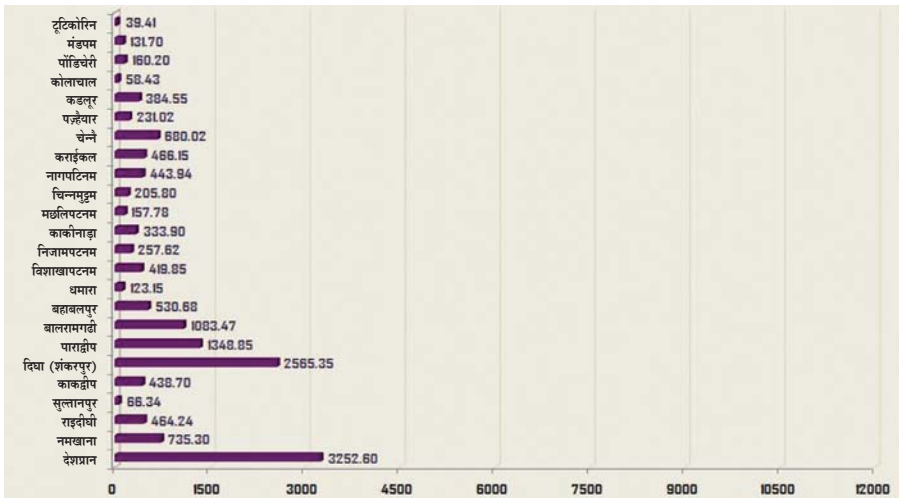

चित्र 7-नवंबर, 2016 के दौरान पूर्वी तट पर स्थित बन्दरगाहों में अवतरण (टन में)

किए गए। जिन बन्दरगाहों में माह के दौरान 1000 से अधिक जहाजों के अवतरण दर्ज किए गए हैं उसके विवरण तालिका 5 में दिया गया है। जहाजों के अवतरण के मामले में गुजरात के वेरावल और पोरबंदर मत्स्यन बन्दरगाह प्रथम स्थान पर रहा। नवंबर के दौरान वेरावल में 4497 जहाजों और पोरबंदर में 2926 जहाजों के अवतरण दर्ज किया गये। इस अवधि के दौरान कर्नाटक के मैंगलोर और मालपे बन्दरगाहों में 2000 से अधिक जहाजों के आगमन दर्ज किये गए। प्रचालन में रहे मत्स्यन यानों में से 80% से अधिक ट्रोलर थे। शेष जहाजें पर्स सीनेर्स, रिंग सीनेर्स, गिल नेटेर्स और पारंपरिक नौकाएँ थी।

सारिणी 5 नवंबर, 2016 के दौरान 1000 से अधिक जहाज के लैंडिंग रिकॉर्ड किए गए मत्स्यन बन्दरगाह

क्रम सं.	मत्स्यहरण बन्दरगाह	राज्य	बोट लैंडिंग की संख्या
1	वेरावल	गुजरात	4497
2	पोरबंदर	गुजरात	2926
3	मंगरोल	कर्नाटक	2110
4	मालपे	कर्नाटक	2006
5	न्यू फेरी वार्फ	महाराष्ट्र	1642
6	मैंगलोर	कर्नाटक	1642
7	सास्सोन डॉक	महाराष्ट्र	1630
8	हारने	महाराष्ट्र	1314
9	होन्नावर	कर्नाटक	1140
10	करवार	कर्नाटक	1027
11	देशप्रान	पश्चिम बंगाल	1006
12	संकरपुर	पश्चिम बंगाल	1001

सारिणी 6 आंकड़ों की तुलनात्मक समीक्षा

	सितंबर, 2016	अक्तूबर, 2016	नवंबर, 2016
कुल लैंडिंग	88,248.95 टन	1,09,796.41 टन	1,04,157.92 टन
पेलाजिक फिन फिश का अवतरण	43%	53%	57%
डिमेरसेल फिन फिश का अवतरण	25%	23%	22%
शेल फिश का अवतरण	32%	24%	21%
सबसे अधिक अवतरित प्रजाति	स्क्विड (12%)	इंडियन ऑइल सारडीन (16%)	इंडियन ऑइल सारडीन (22%)
राज्य में रिकॉर्ड किए गए सर्वाधिक अवतरण	गुजरात (29%)	कर्नाटक (33%)	कर्नाटक (34%)
बन्दरगाह में रिकॉर्ड किए गए सर्वाधिक अवतरण	वेरावेल (16%)	वेरावेल (12%)	वेरावेल (10%)
जहाजों के कुल अवतरण	34,716	39,305	35,597

सारांश

नवंबर, 2016 के दौरान प्रमुख 46 मत्स्यन बन्दरगाहों में दर्ज किए गए मत्स्य अवतरण कुल 1,04,157.92 टन रही, जिनमें पेलाजिक फिन फिश की मात्रा (57%) डिमेरसल फिनफिश (22%) और शेलफिश (21%) दोनों से अधिक रही। 9 समुद्र तटीय राज्यों में सबसे अधिक अवतरण कर्नाटक में दर्ज की गई और कुल पकड़ का 86% पश्चिमी तट के राज्यों में हुई। चुने हुए लगभग 22 बन्दरगाहों में 1,000 टन से अधिक समुद्री मत्स्य का अवतरण दर्ज किया गया और वेरावल बन्दरगाह में सबसे अधिक अवतरण और सबसे अधिक जहाजों के आगमन दर्ज किये गये।

नेटफिश द्वारा पारादीप में मछुआरों के लिए चिकित्सा शिविरों का आयोजन

पारादीप उड़ीसा के प्रमुख बंदरगाहों में से एक है, जहां बड़ी संख्या में मछुआरे, नाविक, बंदरगाह श्रमिक और मत्स्य व्यापारी मत्स्यन के दैनिक कार्यों से जुड़े हुए हैं। अच्छी चिकित्सा सुविधा के लिए इन लोगों को बंदरगाह से काफी लंबी दूरी की यात्रा करनी पड़ती है। बंदरगाह के उपयोगकर्ताओं के बीच चिकित्सा फिटनेस के महत्व को समझते हुए नेटफिश ने नियमित अंतराल पर बंदरगाह में मुफ्त चिकित्सा शिविर आयोजित करने का निर्णय लिया है।

निर्णय के अनुसार 26 दिसंबर 2016 और 24 जनवरी 2017 को परादीप बंदरगाह में दो चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया गया। नेटफिश के राज्य समन्वयक श्री शुभ्रकांत महापात्रा और एस आर ए एस एस के सदस्य श्री गयाधर जेना के साथ गैर सरकारी संगठन ने चिकित्सा शिविर का आयोजन, मेडिकल टीम के सहयोग से किया जिसमें दो डॉक्टरों सहित एक पैथोलोजिस्ट, एक फार्मासिस्ट और सहायक स्टाफ थे। बंदरगाह में माइक से घोषणा की गई और सभी सहकारी समितियों को फोन पर सूचित किया गया, ताकि वे ट्रॉलर के मालिकों को और अन्य सदस्यों को चिकित्सकीय शिविर में स्वास्थ्य जांच के विषय में सूचित कर सकें। ट्रॉलर के मालिकों के संघ ने भी इस चिकित्सा शिविर के आयोजन के लिए सहयोग किया।

दिसंबर में आयोजित चिकित्सा शिविर में लगभग 204 मछुवारों ने और जनवरी में आयोजित शिविर में 203 मछुवारों ने भाग लिया। सामान्य चिकित्सा परीक्षण जैसे ऊंचाई, वजन, बी एम आई, फेट कंटेन्ट, रेंडम रक्त ग्लूकोस स्तर, ब्लड प्रेशर आदि तथा रक्त ग्रूपिंग आदि चिकित्सा टीम द्वारा किया गया और जिन लोगों में छोटी या बड़ी बीमारियों के लक्षण पाए गए उन्हें रोगविज्ञान सम्बन्धी परीक्षण के लिए सलाह दिया गया। रोगविज्ञान सम्बन्धी परीक्षण रिपोर्ट के आधार पर उन्हें मुफ्त दवा दी गई। इस तरह चिकित्सा शिविरों ने मछुआरों को मुफ्त स्वास्थ्य सेवा संबंधी जानकारी और उनके समुदाय की स्वास्थ्य समस्याओं को पहचानने में मदद की। इन शिविरों में गंभीर रोगों की रोकथाम एवं व्यक्तिगत स्वच्छता की आवश्यकता पर भी उन्हें जागरूक किया गया।

चिकित्सा शिविर का एक दृश्य

नेटफिश कोर्डिनेटरों के साथ चिकित्सा दल

एमपीईडीए द्वारा अलंकारिक मत्स्य कृषि को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता अभियान

एमपीईडीए क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्चि

एमपीईडीए क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्चि ने दिनांक 16, 27 व 31 दिसंबर, 2016 को केरल के कोतमंगलम, कासरगोड और चालक्कुडी में 3 जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य एमपीईडीए द्वारा अलंकारिक मत्स्य कृषि के प्रति और एमपीईडीए द्वारा दिये जाने वाले वित्तीय सहायता योजनाओं के बारे में जागरूकता पैदा करना था। इन कार्यक्रमों से 215 प्रतिभागी लाभान्वित हुए। इस जागरूकता अभियान में डॉ. सी.आर. रंजीत कुमार (तकनीकी सलाहकार), एमपीईडीए क्षेत्रीय कार्यालय कोच्चि द्वारा अलंकारिक मत्स्य कृषि के विभिन्न पहलुओं पर और अलंकारिक मत्स्य प्रजनन इकाइयां स्थापित करने के लिए एमपीईडीए की वित्तीय योजनाओं के बारे में व्याख्यान दिया।

क्षेत्रीय कार्यालय, विशाखापट्टनम

एमपीईडीए के क्षेत्रीय कार्यालय, विशाखापट्टनम के माध्यम से दिनांक 7 और 20 दिसंबर 2016 को दो जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। ये अभियान आन्ध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम और विजयनगरम जिले में आयोजित किये गए। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ. ए. अन्सार अली, उप निदेशक, एमपीईडीए क्षेत्रीय कार्यालय, विशाखापटनम ने अलंकारिक मत्स्य उद्योग की वर्तमान स्थिति के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम में विभिन्न स्वयं सहायता दलों, समितियों और इच्छुक किसान समूहों से 80 सदस्य उपस्थित रहे। श्री के. अनिल कुमार (तकनीकी सलाहकार) एमपीईए क्षेत्रीय कार्यालय, विशाखापट्टनम ने अलंकारिक मछलियों के खाद्य और खाद्य आदतों के बारे में समझाया। कार्यक्रम में प्रतिभागियों को

AQUAMART™
by WESTCOAST™ GROUP
Your Trusted Partner for Aquaculture Solutions
AQUA-LIFE
SHRIMP HARVESTER
xpertSea
XperCount2
Xpercount 2
YSI
xylem brand
DO METERS
ATAGO
ATAGO®
REFRACTOMETERS
SHRIMP & FISH SEED
BIO NURTURE SYSTEM
COLLAPSIBLE NURSERY TANKS
BIOFIT GSE
PE LINING
BIO BOOSTER SEEDS
SHRIMP & FISH FEED
Re-seller enquiries solicited • E-mail: aquamart@westcoast.in
West Coast Fine Foods (India) Private Limited.
1401-D, Lotus Corporate Park, Gram Path, Goregaon East, Mumbai 400063, Mobile: +91 7045112255 • Website: www.aquamartindia.in

अलंकारिक मत्स्य प्रजनन इकाईयां शुरू करने में एमपीईडीए द्वारा संचालित सहायता योजनाओं के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी गई और प्रतिभागियों को संबन्धित साहित्य भी वितरित किए गए।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, मैंगलोर

एमपीईडीए, उपक्षेत्रीय कार्यालय (मैंगलोर) ने, कर्नाटक के गांवों में क्रमशः टग्गहल्ली, केन्नलु, सालूर और सिरसी में क्रमशः दिनांक 10, 11, 15, और 28 दिसंबर, 2016 को 4 जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए। कार्यक्रमों में विभिन्न स्वयं सहायता दलों के पुरुष और महिला दोनों सदस्य शामिल 71 लाभार्थियों ने भाग लिया, जिसमें अलंकारिक मत्स्य प्रजनन इकाइयों की स्थापना के लिए एमपीईडीए द्वारा संचालित वित्तीय सहायता योजनाओं के बारे में बताया गया। तकनीकी सलाहकार श्री वरुण बेग्लिडी ने अलंकारिक मत्स्य कृषि और व्यापार के बारे में प्रतिभागियों को संक्षेप में जानकारी दी। कार्यक्रम के प्रतिभागियों को सम्बन्धित साहित्य के साथ छापे गए ब्रोशर और पुस्तिकाएं भी वितरित की गईं।

तकनीकी सलाहकार, बिहार

एमपीईडीए के बिहार में तैनात तकनीकी सलाहकार श्री अविनाश कुमार श्रीवास्तव (अलंकृत मछली विभाग) के माध्यम से दिसंबर, 2016 के दौरान 4 जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। ये अभियान कपचाही (6 दिसम्बर 2016) और बकरगंज (26 और 27 दिसम्बर 2016) में आयोजित किए गए। कार्यक्रम के माध्यम से 99 कृषकों को एमपीईडीए की वित्तीय सहायता योजनाओं की जानकारी दी गई। प्रतिभागियों को अलंकारिक मत्स्य कृषि के पहलुओं और इसके फायदे के बारे में समझाया गया।

Sealed Air
Food Care

Leading the way in food hygiene and packaging.

At Sealed Air Food Care, we improve access to a safer, higher quality and more sustainable sea food supply chain.
Our innovative packaging and hygiene solutions and expertise help build our customer's brands and improve food safety, shelf life and operational efficiency while reducing food waste.

FOOD SAFETY

Ensuring food safety is a top priority at Sealed Air, and our unique combination of Diversey™ hygiene and Cryovac® packaging solutions addresses food safety concerns throughout your entire process.

OPERATIONAL EFFICIENCY

With our total systems approach, we are able to view your entire business, and then optimize each section and create cost efficiencies that translate into increased sustainability and revenue.

SHELF LIFE EXTENSION

Creating quality shelf life is a crucial differentiator for running a successful process. We help you extend shelf life and reduce food waste through comprehensive hygienic procedures and innovative packaging systems.

BRAND BUILDING

All stakeholders in the value chain seek to strengthen their brands and grow customer loyalty. We help our clients stand out from an overwhelming number of choices in the marketplace.

CRYOVAC®

Diversey

Sealed Air India Pvt. Ltd.

501 5th Floor Ackruti Centre Point, MIDC Central Road, Andheri (E), Mumbai - 400 093. India
Phone: +91 22 66444222 • Fax: +91 22 66444223 • Toll Free Helpline: 1800 209 2095 • Email: foodcare.india@sealedair.com

सुंदरबन कृस्ती मेला ओ लोको संस्कृति उत्सब एक रिपोर्ट

21 वीं सुंदरबन कृस्ती मेला ओ लोको संस्कृति उत्सब 20 दिसंबर 2016 से 29 दिसंबर 2016 तक आयोजित किया गया। इस 10 दिवसीय मेगा प्रदर्शनी व कृषि, लघु उद्योग, विज्ञान और सांस्कृतिक मेले का आयोजन, कुल्तली मिलन तीर्थ सोसाइटी, कुल्तली, बसन्ती, दक्षिण 24 परगना द्वारा आयोजित किया गया था। महत्वपूर्ण और रंगबिरंगी मेले के रूप में इस मेले की अपनी पहचान है। इस मेला को प्रत्येक वर्ष केंद्र एवं राज्य सरकारों तथा मान्यता प्राप्त गैर सरकारी संगठनों के साथ-साथ अन्य निजी संगठनों की भागीदारी से आयोजित किया जाता है। केंद्र सरकार के 40 विभाग/संगठन, राज्य सरकार के 7 विभाग/संगठन और 200 निजी संगठनों ने इस मेले में भाग लिया। एमपीईडीए द्वारा जागरूकता, प्रशिक्षण, ज्ञान आधारित प्रबंधन पर बैनर, नेटफिश एवं नेशनल सेंटर फॉर सस्टेनेबिल एक्वाकल्चर (नाक्सा) के माध्यम से प्रदर्शित किया गया।

इस प्रदर्शनी का उद्घाटन मानव अधिकार आयोग के पूर्व अध्यक्ष, न्यायमूर्ति नारायण चंद्र शिल द्वारा किया गया। मेले में कई मंत्री, पूर्व मंत्री, सांसद, विधायक, सरकारी, वित्तीय तथा बैंकिंग क्षेत्र आदि के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए। सुंदरबन के पिछड़े और गरीब लोगों को राष्ट्र व्यापी विकास कार्यक्रमों के बारे में जानकारी देने के लिए यह प्रदर्शनी व मेला बेहद उपयोगी रहा।

प्रदर्शनी व मेला को मुख्य रूप से पांच क्षेत्रों में विभाजित किया गया था (1) शिक्षा और संस्कृति पार्क (2) मनोरंजन पार्क (3) खरीद विक्रय पार्क (4) खाद्य पार्क और (5) बदाबन पार्क। दस दिन तक आयोजित मेले में सुंदरबन और अन्य क्षेत्रों के दूरदराज के गांवों से पांच लाख से अधिक लोग आये। मेले में शिक्षाप्रद प्रदर्शनी, रचनात्मक आलोचनाएं, कार्यशालायें/सेमिनार, विभिन्न प्रतियोगितायें, रक्तदान शिविर आदि शामिल थे। मेले में डिजिटल भारत पर संगोष्ठी; कैरियर मार्गदर्शन; नए युग के लिए भारत का मुख्य विषय (थीम विजन); स्थाई जल प्रबंधन; कृषि वन प्रणाली, स्वच्छ भारत, फसल बीमा योजना; बेटी बचाओ, बेटी पढाओ इत्यादि का आयोजन कुल्तली मिलन तीर्थ सोसाइटी ने किया था। मेला समिति द्वारा एन आई ई एल आई टी द्वारा नगदी रहित भुगतान पर कार्यशाला का आयोजन भी किया गया।

उद्घाटन के दौरान दीप प्रज्वलित करते हुए माननीय न्यायाधीश नारायण चन्द्र शिल

प्रदर्शित एमपीईडीए का बैनर

अक्वाकल्चर परिदृश्य

एमपीईडीए के क्षेत्रीय अधिकारियों द्वारा अक्वाकल्चर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम और अभियान

सैटलाइट केंद्र, रत्नागिरी

एमपीईडीए के सैटलाइट केंद्र, रत्नागिरी द्वारा 20 से 24 सितंबर, 2016 तक रत्नागिरी जिला के नानिज गाँव में "पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ श्रिम्प/ प्रोन फ़ार्मिंग और अक्वाकल्चर के विविधीकरण" पर अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लाभार्थियों के लिए एक पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन नानिज गाँव के सरपंच श्रीमती शर्मीला गवाड़े ने किया। तकनीकी सत्र का संचालन रत्नागिरी स्थित सैटलाइट केंद्र के कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी (अक्वा) डॉ. विष्णुदास गुनागा, एमपीईडीए के पनवेल स्थित क्षेत्रीय केंद्र के क्षेत्रीय पर्यवेक्षक श्री मंगेश गवाड़े और मत्स्य पालन महाविद्यालय के संसाधकों ने किया। क्रैब/सीबास/तिलापिया के लिए स्थान का चयन, मत्स्य हरण और कृषि तकनीक पर विषय प्रस्तुत करके उस पर चर्चा की गई। श्रिम्प फ़ार्मिंग और अक्वाकल्चर के विविधीकरण से संबन्धित पत्रक प्रशिक्षार्थियों के बीच वितरित किए गए।

कार्यक्रम के अंतिम दिन भाग लेने वाले प्रशिक्षार्थी श्रिम्प फ़ार्मिंग और अक्वाकल्चर के विविधीकरण पर एमपीईडीए के अधिकारियों/ संसाधकों के साथ विचार विमर्श करने के लिए एक समूहिक चर्चा का भी आयोजन किया गया। अंत में प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए।

क्षेत्रीय केंद्र, भुवनेश्वर

एमपीईडीए क्षेत्रीय केंद्र, भुवनेश्वर द्वारा पुरी जिला, उड़ीशा के तलमाला गाँव के बैठक हॉल में 21 श्रिम्प कृषकों के लिए "श्रिम्प फ़ार्मिंग और प्रजातियों के विविधीकरण पर बीएमपी को अपनाया जाना" विषय पर 23 से 25 नवंबर, 2016 तक एक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन पुरी जिला के तलमाला पंचायत के सरपंच श्री बलकृष्ण पेन्थोई ने किया। तकनीकी सत्र का संचालन एमपीईडीए के उप निदेशक श्री यू सी महापात्र, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी श्री एस एम शिरोदकर, नाक्सा के क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री सकराजीत पटशानी और राज्य के मत्स्य विभाग के संसाधकों ने किया। उड़ीशा में अक्वाकल्चर की स्थिति, बीएमपी को अपनाना

मत्स्यपालन महाविद्यालय, रत्नागिरी के असोसिएट प्रोफेसर डॉ. पाटान अतिथि वक्ता के रूप में व्याख्यान देते हुए।

भाग लेने वालों का एक दृश्य

और अन्य तकनीकी पहलू जैसे स्थान का चयन, तालाब का निर्माण से लेकर फसल निकालना, एमपीईडीए की सहायता/वित्तीय स्कीमें, श्रिम्प की जैविक पहलू, गुणवत्ता वाले बीजों का चयन, परिवहन, परिस्थिति अनुकूलन करना और बीजों को डालना, तालाब को तैयार करना, मिट्टी व जल की गुणवत्ता प्रबंधन, खाद्य व खाद्य प्रबंधन, रोग निवारण और प्रतिबंधित एंटीबायोटिक्स/दवाओं के प्रयोग से दूर रहना, जैविक सुरक्षा के उपाय, श्रिम्प फ़ार्मिंग के आर्थिक पक्ष, फार्म का नामांकन और अक्वाकल्चर में जीपीएस, अक्वा समितियों का गठन और उसके लाभ, विविध प्रजातियों जैसे मड क्रैब, सी बास, तिलापिया आदि की कृषि आरंभ करना इत्यादि विषय प्रस्तुत किए गए और उस पर चर्चा की गई। पंजीकरण के समय तालाब के आंकडों के रजिस्टर, श्रिम्प फ़ार्मिंग में बीएमपी पर पुस्तिकाएँ, अक्वाकल्चर में एंटीबायोटिक के दुरुपयोग पर पत्रक और अन्य संबन्धित साहित्य प्रशिक्षार्थियों को दिये गए। श्रिम्प फ़ार्मिंग, सी बास की कृषि, तिलापिया कृषि आदि पर एक लघु फिल्म भी प्रदर्शित किया गया।

प्रशिक्षार्थियों के लिए 24 नवंबर, 2016 को पास के पी मोनोडोन/ एल वनामी फार्मों पर एक क्षेत्रीय दौरे का भी आयोजन किया गया ताकि उन्हें जैविक सुरक्षा के उपाय, श्रिम्प की स्वस्थ्य जांच, खाद्य जांच ट्रे का अवलोकन, जल की गुणवत्ता की मॉनिटरिंग और अनुरक्षण से परिचित होने के लिए अवसर मिल सके।

25 नवंबर, 2016 को प्रशिक्षार्थियों के लिए एक ग्रूप चर्चा का भी आयोजन किया गया ताकि वे एमपीईडीए/ राज्य मत्स्य विभाग के अधिकारियों के साथ बातचीत कर सके और तीन दिनों के दौरान सिखाये गए तकनीकी पहलुओं का संक्षेपण किया जा सके। समापन समारोह में पुरी जिला के सहायक मत्स्य अधिकारी श्री मधुसूधन गिरि उपस्थित रहे और प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र और छात्रवृत्ति प्रदान की।

उदघाटन भाषण देते हुए श्री बी पेन्थोई, सरपंच

कृषकों को संबोधित करते हुए श्री यू सी मोहपात्रा, उप निदेशक

प्रशिक्षार्थियों की एक झलक

उत्तरदायित्वपूर्ण श्रिम्प फ़ार्मिंग और अक्वाकल्चर में विविधीकरण पर श्रिम्प कृषकों की बैठक

पास के अस्तरंगा खंड में किए गए वैज्ञानिक श्रिम्प कृषि की सफलता को देखते हुए पुरी जिला के गोप और काकातपुर खंडों में वैज्ञानिक श्रिम्प कृषि काफी लोकप्रिय हो रही है। इन इलाकों में श्रिम्प फार्म के विकास में एल वनामी का योगदान रहा है। अधिकतर टाइगर श्रिम्प फार्मों को एल वनामी श्रिम्प फार्म के रूप में बदले जा रहे हैं और कई नए फार्म केवल एल वनामी की कृषि को ही अपना रहे हैं। चिलका के पास वाले इलाकों के मुक़ाबले अच्छी गुणवत्ता वाले समुद्री ज्वार पानी उपलब्ध होने के कारण पुरी जिला उन्नत उत्पादन के लिए काफी उपयुक्त है। कुछ कृषक तिलापिया और मड क्रैब की कृषि में भी रुझान दिखा रहे हैं।

एमपीईडीए के भुवनेश्वर स्थित क्षेत्रीय केंद्र द्वारा उत्तरदायित्वपूर्ण श्रिम्प फ़ार्मिंग और अक्वाकल्चर में विविधीकरण पर श्रिम्प कृषकों का एक सम्मेलन पुरी जिला के अस्तरंगा में 20 दिसंबर, 2016 को आयोजित किया गया। सम्मेलन में श्रिम्प कृषक, मत्स्य खाद्य व्यापारी/उपकरण सप्लायर और एमपीईडीए, नाक्सा, आईसीएआर सीआईएफ़ए, सीएमएफ़आरआई, राज्य मत्स्य विभाग के अधिकारीयों सहित 112 प्रतिभागी शामिल रहे। भाग लेने वालों को प्रचार सामग्री और पर्चियाँ आदि दिये गए।

आईसीएआर-सीआईएफ़ए, भुवनेश्वर के निदेशक डॉ. पी. जयशंकर ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अस्तरंगा पंचायत समिति के अध्यक्ष श्री स्वादिन कुमार नायक इस सम्मेलन के माननीय अतिथि थे। अन्य उच्च अधिकारियों में पुरी के जिला मत्स्य पालन अधिकारी, सीएमएफ़आरआई, पुरी के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. रीता जयशंकर और अस्तरंगा के खंड विकास अधिकारी श्री बिनोद कुमार स्वाइन आदि उपस्थित रहे।

अपने स्वागत भाषण में भुवनेश्वर स्थित एमपीईडीए के क्षेत्रीय कार्यालय के उप निदेशक (अक्वाकल्चर) श्री यू सी मोहपात्रा ने उडीशा में श्रिम्प कृषि की वर्तमान प्रवृत्ति और देश से हो रहे निर्यात में उसकी भागीदारी आदि के बारे में एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने एमपीईडीए के विभिन्न उन्नयन कार्यकलापों, वित्तीय स्कीमों और जीपीएस मैपिंग और फार्मों के नामांकन, निर्यात के लिए अक्वाकल्चर का विविधीकरण, अक्वा क्लबों के माध्यम से सहकारिता दृष्टिकोण, गोपालपुर में पीसीआर डायग्नोस्टिक लैब और भुवनेश्वर में गुणवत्ता नियंत्रण लैब को चुस्त दुरुस्त करना आदि कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से बताया।

आईसीएआर-सीआईएफ़ए, भुवनेश्वर के निदेशक डॉ. पी. जयशंकर ने एमपीईडीए द्वारा आयोजित ऐसे कार्यक्रमों की तारीफ करते हुए सुझाव दिया कि समस्याओं को उत्तरदायित्वपूर्ण तरीके से दूर करके इस उद्यम को व्यवहार्य और स्थाई बनाएँ। उन्होंने कृषकों से अनुरोध किया कि तकनीकी विशेषज्ञों के निरंतर संपर्क में रहकर वर्तमान समय के विकास गतिविधियों की जानकारी से अपने आप को आद्यतन बनाए रखें। उन्होंने कृषकों को सलाह दिया कि प्रजातियों की उपयुक्तता के अनुसार स्थान का उपयोग करें और एल वनामी कृषि तालाबों में

आई सी ए आर-सी आई एफ़ ए, भुवनेश्वर के निदेशक डॉ. पी जयशंकर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए

खनिज की स्थिरता को बनाए रखें और अच्छे प्रबंधन को अपनाएं।

अपने बधाई संदेश में पुरी के मत्स्यपालन अधिकारी श्री संतोष दलाई ने कृषकों से ज़ोर देकर कहा कि वे अपने श्रिम्प फार्मों को सी ए ए के साथ पंजीकृत करें। उन्होंने राज्य सरकार सहायता स्कीमों और सी ए ए पंजीकरण के लिए प्रक्रिया के बारे में भी बताया और आश्वासन दिया कि कोड को व्यवहार्यता में लाने के लिए और अक्वाकल्चर के क्षेत्र में बेहतर प्रगति करने के लिए मार्गनिर्देश देकर सहायता करेंगे।

सीएमएफ़आरआई, पुरी के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. रीता जयशंकर ने सुझाव दिया इस क्षेत्र में स्थिरता बनाए रखने के लिए उत्पादन लागत को कम करें। उन्होंने कृषकों से अनुरोध किया कि वे अक्वा क्लबों का गठन करें और व्यापार में होने वाले हाल की समस्याओं और विकास कार्यकलापों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए एमपीईडीए के अधिकारियों के निरंतर संपर्क में बने रहें। उन्होंने कृषकों की आमदनी में वृद्धि करने के लिए मड क्रैब, मसल्स और अन्य खारे पानी के फिन मछलियों के उत्पादन करने के बारे में भी जानकारी दी।

अस्तरंगा पंचायत समिति के अध्यक्ष श्री स्वदिन कुमार नायक ने बताया कि एमपीईडीए से उनको पूर्व में लाभ हुआ है और उन्होंने उन्नत उत्पादन के लिए पूरी में पहली बार वैज्ञानिक तरीके से श्रिम्प फ़ार्मिंग आरंभ की है। उन्होंने विश्वास के साथ कहा कि यदि कृषक तालाब का सही रखरखाव करें तो उन्हें उत्पादन में अवश्य सफलता मिलेगी।

आईसीएआर-सीआईएफ़ए, भुवनेश्वर के वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री प्रबित्रा स्वाइन और अस्तरंगा के खंड विकास अधिकारी श्री बिनोद कुमार स्वाइन ने भी अपने विचार रखे। भुवनेश्वर स्थित एमपीईडीए के क्षेत्रीय केंद्र के सहायक निदेशक श्री एन वी थंबाड़ा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

तकनीकी सत्र के दौरान एल वनामी कृषि कार्यकलाप, निर्यात प्रजातियों के लिए अक्वाकल्चर में विविधीकरण जैसे मड क्रैब और तिलापिया, श्रिम्प में पाई जाने वाली सामान्य बिमारियाँ और उसका निवारण आदि विषय प्रस्तुत करके उस पर चर्चा की गई। अक्वा सोसाइटी के माध्यम से बीएमपी को अपनाने के बारे में प्रतिभागियों को स्थानीय भाषा में एक लघु फिल्म भी दिखाया गया।

उसके बाद विभिन्न विषयों पर संदेह को दूर करने के लिए एक समूहिक चर्चा का भी आयोजन किया गया।

एमपीईडीए, भुवनेश्वर के उप निदेशक श्री यू सी मोहपात्रा कृषकों को सम्बोधित करते हुए

प्रतिभागियों की एक झलक

श्री
Shree
GANESH
Frozen Food Pack Tray
Material used Food Stuff (NON TOXIC) & Frozen grade Low temperature resistance at -40° Centigrade.(Block Process use)
Regular laboratory test for Quality Maintain & control
Production capacity : 20,000 trays per day.
We also make Plastic tray as per your special required size and design.
Packing Capacity : 200 Gms. to 2 Kg. Suitable for Retail Sale to Restaurants and directly to the Consumers
Promise to Pack
SQUID, CUTTLE FISH, OCTOPUS, RIBBON FISH, SHRIMP & Other Items
SHREE GANESH PLAST PACKAGING
Plot No. G-2805, Lodhika G.I.D.C., Vill. Metoda, Nr. 66 K.V. Sub Station, Kranti Gate, Dist. Rajkot - 360 021 (Gujarat) India
E-mail : ganeshplast2004@gmail.com TELE FAX : (F) 02827 - 287935 Mobile : 98256 12813 / 97129 12813

ROMER Veterinary Drug residue kit.....
A technology worth implementing
Provide free training and demonstration in compliance with CRL2010 guidelines adopted by MPEDA and EIA for all 5 VDRs after purchase
Nitrofurans – AHD, AOZ, AMOZ, SEM and Chloramphenicol
Sb SHAH BROTHERS Future. Ready.
Wadala Shree Ram Industrial Estate, Unit No-C-32, Third Floor, G D Ambekar Marg, Wadala Mumbai, Maharashtra 400031
Email ID: foodkit@shahbros.com
Web: www.shahbros.com
Tel No.: 022 43560428
ROMER
Romer Labs®

कोचीन में आयोजित हरितोत्सवम, 2016 में एमपीईडीए की भागीदारी

केंद्र और राज्य सरकार के सहयोग से फार्मर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया, एरणाकुलम द्वारा आयोजित हरितोत्सवम 2016 (पॉल्ट्री आयुर एग्रो पेट एक्स्पो 2016) 7 से 16 अक्तूबर, 2016 तक मैरीन ड्राइव एरणाकुलम में आयोजित किया गया। 9 अक्तूबर, 2016 को विश्व अंडा दिवस भी आयोजित किया गया।

इस प्रदर्शिनी में उद्यमी शिक्षा, उन्नत तकनीकी मुर्गी पालन, आयुर्वेद, जैविक खेती, पालतू पशु पक्षियों की प्रदर्शिनी, रद्दी प्रबंधन, पशु संरक्षण, पर्यटन, खेल कूद, संस्कृतिक गतिविधियां और वाणिज्यिक स्टॉल आदि आयोजित किए गए। इसके अलावा विभिन्न विषयों पर सेमिनार और कार्यशालाएं भी आयोजित की गई। प्रमुख कलाकारों और संगठनों द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया, जिसमें कई मंत्री, सांसद गण, विधायक गण और कई प्रमुख कलाकार आदि उपस्थित रहे। पॉल्ट्री आयुर एग्रो पेट एक्स्पो, 2016 के भाग के रूप में एक हाई टेक मनोरंजन पार्क का भी गठन किया गया।

इस प्रदर्शिनी का उद्घाटन केरल सरकार के स्थानीय स्वशासन, अल्पसंख्यक कल्याण, वक्फ और हज तीर्थयात्रा मंत्री श्री के टी जलील ने किया। स्टालों का उद्घाटन श्री हैबी ईडन, विधायक ने 7 अक्तूबर, 2016 को किया। इस प्रदर्शिनी में लगभग 50 संगठनों ने भाग लिया। प्रदर्शिनी में जैविक खेती, मुर्गी पालन, रद्दी संस्करण, मधुमक्खी पालन, मशरूम की खेती, अक्वापोनिक्स आदि विज्ञान व तक्नोलोजी के क्षेत्र के आधुनिकतम विकास की गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया।

एमपीईडीए ने कोच्चि स्थित अपने क्षेत्रीय कार्यालय के माध्यम से इस प्रदर्शिनी में भाग लिया। एमपीईडीए के 9 वर्ग मीटर के स्टाल में अक्वापोनिक्स सिस्टम, जो मत्स्य और पौध उत्पादन का एक सम्मिश्रण है जिसमें अक्वाकल्चर और हाइड्रोपोनिक्स सिस्टम का प्रयोग किया जाता है, अलंकारिक मत्स्य अक्वेरियम आदि को भी प्रदर्शित किया गया। 10 दिनों तक चले इस प्रदर्शिनी में मंत्री, उद्यमी, शिक्षाविद, अनुसंधानकर्ता, छात्र छात्राएँ और एमपीईडीए के विभिन्न कार्यक्रमों के लाभार्थी जैसे जीवन के विभिन्न स्तरों के दर्शक इस स्टाल का दौरा किया।

प्रदर्शिनी का एक दृश्य

राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर आंध्र प्रदेश में एमपीईडीए द्वारा डिजिटल भुगतान पर अभियान का आयोजन

राष्ट्रीय युवा दिवस के यादगार के रूप में 12 जनवरी, 2017 को कृष्णा जिले के नागयालंका केंद्र, कृष्ण रेवु, विजयवाड़ा में एमपीईडीए के क्षेत्रीय केंद्र (अक्वा) द्वारा डिजिटल भुगतान कार्यकलापों पर एक अभियान चलाया।

इस अभियान में पास के इलाकों के मड क्रैब कृषि करने वाले 16 कृषकों ने भाग लिया। डिजिटल लेनदेन की अवधारणा के बारे में उन्हें विस्तार से बताया गया। कृषकों से अनुरोध किया गया कि वे लेनदेन के लिए नेट बैंकिंग का प्रयोग करें और रोकड़ विहीन अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने के लिए सभी उपयोज्य वस्तुओं के लिए कार्ड से भुगतान का सहारा लें। अधिकतर कृषकों के पास डेबिट कार्ड थे। डेबिट कार्ड से लेन देन के विभिन्न तरीकों और उठाए जाने वाले सुरक्षा उपायों के बारे में भी उन्हें बताया गया। उपकरणों से लेकर उपयोज्य के भुगतान तक के सभी लेनदेन रोकड़ विहीन तरीके से हस्तांतरित करने के बारे में समझाया गया। ऑन लाइन भुगतान करने का नमूना भी दिखाया गया। इंटरनेट बैंकिंग की अवधारणा और उसके लाभ के बारे में भी कृषकों को समझाया गया। नाक्सा के अधिकारी भी इस बैठक में शामिल रहे।

डेबिट कार्ड के गुण और प्रयोग के बारे में बताते हुए श्री अरचिमान लाहिरी, सहायक निदेशक

समाचार स्पेक्ट्रम

कैरीफोर बेल्जियम का निर्णय पंगासियूस नहीं बेचेंगे

कैरीफोर बेल्जियम ने यह निर्णय लिया है कि वे पंगासियूस मछली का भंडारण नहीं करेंगे और इस मछली को उनके ताजे मत्स्य काउंटर (फिश काउंटर और सेल्फ सर्विस) तथा प्रशीतित खाद्य सेक्शन से नहीं बेचेंगे। इस निर्णय से उनके अपने ब्रांड उत्पादन और राष्ट्रीय स्तर के ब्रांड उत्पादन पर भी असर पड़ेगा।

पिछले कुछ वर्षों से पंगासियूस को खाने को लेकर आलोचना का सामना करना पड रहा था। कैरीफोर हमेशा यह सुनिश्चित करने के लिए सभी जरूरी सावधानी बरतते हैं कि वे जो भी माल बेचते है वे उच्च गुणवत्ता का हो। वे अपने आपूर्तिकर्ताओं को उन विनिर्देशों में बताए गए सख्त आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए फार्मों और उत्पादन स्थानों पर नियमित जांच करने के लिए कहा जाता है, जो उन पर लगा दिया जाता है, इस प्रकार वे इसे सुनिश्चित करते हैं।

यद्यपि कैरीफोर इस बात से पूरी तरह आश्वस्त है कि जो पंगासियूस वे बेच रहे थे वे त्रुटिहीन थे, लेकिन उन मत्स्य फार्मों का जो प्रभाव पर्यावरण पर पड़ रहा है, (भारी मात्रा में मलमूत्र और खाद्य कचरा द्वारा हो रहे जल प्रदूषण) उसे नियंत्रित नहीं किया जा सकता।

- www.carrefour.com

नीली क्रांति पश्चिम बंगाल द्वारा मत्स्यपालन को उभरता क्षेत्र मानना

पश्चिम बंगाल ने मत्स्य पालन क्षेत्र को उभरते हुए क्षेत्र की श्रेणी में शामिल किया है, जहां पर मत्स्य उत्पादन, मत्स्य निर्यात, मत्स्य संसाधन और मत्स्य पर्यटन के क्षेत्र में निवेश की काफी संभावनाएं हैं। राज्य चाहते हैं कि वर्ष 2020 तक उत्पादन का लक्ष्य 15 मिलियन टन तक प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड की उत्पादकता को 8% की वार्षिक दर से बढ़ाने हेतु मत्स्य उत्पादन में तेजी लाया जाये। पश्चिम बंगाल रु. 3000 करोड़ की परिरक्षित योजना के एक बड़े हिस्से को प्राप्त करना चाहता है, जो नीली क्रांति के द्वारा मत्स्य पालन के क्षेत्र में समेकित विकास और प्रबंधन लाने का प्रयास कर रहा है।

पश्चिम बंगाल राज्य मत्स्यपालन बोर्ड के निदेशक सौम्यजीत दास ने कहा कि राज्य ने प्रस्ताव के प्रथम चरण में रु. 250 करोड़ भेजी है, जिसमें से रु. 100 करोड़ डीसिल्टेशन (खारापन को हटाने) के लिए, रु. 50 करोड़ बीज कृषि के लिए और रु. 100 करोड़ संसाधन के लिए है। लेकिन समेकित विकास और मत्स्य प्रबंधन के भाग के रूप में पिसिकल्चर विभाग के साथ राज्य ने बाह्य संरचनात्मक सुविधायें जैसे ग्रामीण सड़कों का निर्माण, गृह निर्माण, ग्रामीण वैद्युतीकरण, ट्यूब वेल, सामुदायिक हॉल और इनलैंड और समुद्री मत्स्य गांवों में ऑडिटोरियम आदि के निर्माण के लिए कदम उठाए जा चुके हैं।

राज्य ने 810 बड़े बड़े जल भंडारों को मत्स्यपालन के लिए अलग किया है, जहां पर मत्स्य खाद्य देने के लिए रु. 23 करोड़ खर्च किए जा चुके हैं। सरकार एक समेकित मत्स्यपालन क्षेत्र का सृजन करेगी, मत्स्य एस्टेट्स को विकसित करेगी, सुंदरबन और दिघा को विशेष मत्स्यपालन क्षेत्र के रूप में विकसित करेगी, बडी बडी मछलियों की कृषि को बढ़ावा देगी और एकीकृत विकास और मत्स्यपालन के प्रबंधन के रूप में बेघर मछुवारों को भूमि औए कानूनी कागजात भी प्रदान किया जाएगा। मत्स्यपालन राज्य मंत्री श्री चंद्रनाथ सिन्हा के अनुसार सरकार ने लघु, छोटे, माध्यम और बृहद उद्योग के लिए पश्चिम बंगाल मत्स्य निवेश पॉलिसी 2015 का गठन किया है जो नए लघु, छोटे, मध्यम और बृहद उद्योग के गठन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करेगी। श्री सिन्हा ने आगे कहा कि इससे इस क्षेत्र को तेजी मिलेगी और इन उद्योगों को राज्य के सबसे कम विकसित क्षेत्र में भी विकास को प्रोत्साहित करेगी।

उन्होंने कहा, चूंकि देश के कुल मत्स्य उत्पादन में 2016 में 16.71 लाख मेट्रिक टन

मत्स्य उत्पादन के साथ पश्चिम बंगाल का योगदान 20% रहा और कुल समुद्री उत्पाद निर्यात यू एस डॉलर 530.91 मिलियन था जो 2016 में भारत से किए गए यू एस डॉलर 4687.94 मिलियन के कुल समुद्री उत्पाद निर्यात का 11.33% होता है। इसलिए हम राज्य के लिए और अधिक राजस्व प्राप्त करने हेतु उत्पादन, संस्करण और निर्यात पर विचार कर सकते हैं। श्री सिन्हा ने आगे कहा कि हम इस कार्य के लिए राष्ट्रीय मत्स्य बोर्ड के साथ कार्य कर रहे हैं और राज्य ने मत्स्यपालन के क्षेत्र में निवेश आकर्षित करने के लिए और इसे एक उभरते हुए क्षेत्र के रूप में विकसित करने के लिए इंडियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स (आईसीसी) के साथ गठबंधन कर लिया है। आई सी सी और राज्य सरकार मत्स्य के क्षेत्र में निवेश आकर्षित करने के लिए एक उपाय के रूप में बंगाल मत्स्य मेला आयोजित करने के लिए सहमत हो गए हैं।

मत्स्य विभाग के एक अधिकारी ने कहा, ऐसे मेले बंगाल की सीमा से परे भी आयोजित किए जाने चाहिए और भारत की सीमा से भी परे ले जाने चाहिए ताकि इसे एक उभरते हुए क्षेत्र के रूप में आगे बढ़ाया जा सके।

आईसीसी के अध्यक्ष आदित्य अगरवाल ने कहा कि यदि पूंजी को आकर्षित करना हो तो सरकार की तरफ से भी कुछ पहल करने की आवश्यकता है जिसमें सभी प्रकार के क्लियरेंस के लिए समय निर्धारित होने चाहिए और श्रमिकों के विवादों से निपटने के लिए व्यवस्था होनी चाहिए इससे अच्छा व्यापारिक वातावरण बनेगा। मत्स्य उद्योग के क्षेत्र में बाह्य संरचना, अनुसंधान और अंतर्राष्ट्रीय विपणन के पूर्ण मूल्य शृंखला तैयार करने के लिए सरकार को चाहिए कि जल स्रोतों को गैर सरकारी और सरकारी साझेदारी के तरीके से उद्यम के लिए लीस पर दें। इसके अलावा बृहद रूप में कुशलता को विकसित करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिए इससे इस क्षेत्र में कुशल श्रमिक उपलब्ध हो जाएगा और निवेश का आधार बनेगा।

श्री दास ने कहा कि पश्चिम बंगाल वित्त वर्ष 2017 में 18 लाख मेट्रिक टन से अधिक मत्स्य के उत्पादन के लिए बिलकुल तैयार है जिसमें से 75% ताजा पानी की मछलियाँ और 25% खारे पानी की मछलियाँ होंगी। क्रैब, श्रिम्प और ताजा पानी प्रोन आदि के निर्यात प्रगति कर रही है, लेकिन वियतनाम भारत के लिए एक सशक्त प्रतियोगी के रूप में उभर रहा है, विशेषकर टाइगर प्रोन के क्षेत्र में। भारत बांग्लादेश से हिल्सा मछली आयात करने वाला प्रमुख आयातक है, लेकिन अब जापान, कंबोडिया, थाईलैंड, संयुक्त अरब अमीरात और यूरोप के भाग के परंपरागत बाजार के अलावा भारत के लिए बांग्लादेश भी एक नए निर्यात बाजार के रूप में उभर रहा है।

श्री अगरवाल ने कहा, नए बाज़ारों को तलाशने के लिए राज्य को हस्तक्षेप स्कीम पर कार्य करना होगा। निवेश के लिए निजी क्षेत्र की कंपनियों से पूंजी प्राप्त करने के लिए मत्स्य पर्यटन की भी घोषणा करनी होगी।

- www.financialexpress.com

मत्स्य सम्पदा पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के संबंध में सीएमएफ़आरआई द्वारा सार्क संगठन को सूचित

केंद्रीय समुद्री मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान (सीएमएफ़आरआई) ने भारत के तटीय मत्स्यहरण और अक्वाकल्चर क्षेत्र पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के संबंध में कंट्री स्टेटस रिपोर्ट (सीएसआर) प्रस्तुत किया है।

यह रिपोर्ट सार्क कृषि केंद्र (एसएसी) द्वारा सार्क राज्यों के प्रतिनिधि राष्ट्रों के साथ आयोजित वीडियो सम्मेलन के दौरान प्रस्तुत किया गया है।

यह वीडियो सम्मेलन जलवायु परिवर्तन की वजह से सार्क सदस्य देशों के कृषि के क्षेत्र में होने वाले प्रभाव के बारे में पता लगाने के लिए ढाका में मुख्यालय वाले एसएसी द्वारा की गई पहल और उसके लिए उपयुक्त कदम उठाने के लिए आयोजित की गई थी।

इस सम्मेलन में सीएमएफ़आरआई के निदेशक श्री ए गोपालकृष्णन के नेतृत्व में एक तीन सदस्य टीम ने भारत का प्रतिनिधित्व किया।

इस टीम ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी है, जिसमें जलवायु परिवर्तन से भारत में तटीय मत्स्यन और अक्वाकल्चर के क्षेत्र पर पड़ने वाली समस्याओं के विवरण शामिल किया गया है।

जलवायु आधारित लचीला अक्वाकल्चर (एनआईसीआरए) पर राष्ट्रीय नवाचारों के परियोजना समन्वयक पी यू जकरिया और सीएमएफ़आरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक ग्रिनसन जॉर्ज सीएमएफ़आरआई टीम के अन्य सदस्य थे, जिन्होंने इस क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन से समुद्री पारिस्थितिकी, मत्स्य सम्पदा, मत्स्यहरण क्षेत्र, अक्वाकल्चर, विपणन और बाजार आदि पर होने वाले व्यवधानों को प्रतिपादित करते हुए

सीएसआर तैयार की थी। इस रिपोर्ट में मछुवारे समुदाय की वर्तमान स्थिति को भी शामिल किया गया है।

उपचारी कदम

सम्मेलन के दौरान, सार्क के प्रतिनिधियों ने जलवायु परिवर्तन से मत्स्य सम्पदा और अक्वाकल्चर पर होने वाले प्रभाव को कम करने के लिए भविष्य में सदस्य देशों द्वारा उठाए जाने वाले उपचारी कदमों की समीक्षा की और सिफ़ारिशों की एक सेट को अंतिम रूप दिया।

बैठक ने जलवायु परिवर्तन की संवेदनशीलता का सामना करने के लिए और सहयोग बढ़ाने तथा उसके लिए व्यापक प्रयास करने को ध्यान में रखते हुए और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने के लिए नीति तैयार करने हेतु एक सार्क स्तरीय कार्य दल गठित करने हेतु सिफ़ारिशों को प्राथमिकता दी है।

बीजिनेस लाइन

उड़ीशा के गंजाम जिले के दासेपुर, गोपालगंधा जलाशय में प्रशिक्षण व क्षमता निर्माण कार्यक्रम

नए विकसित मत्स्यहरण और मत्स्यहरण के बाद की तकनीकों को जनजाति के मछुवारे समुदाय के पुरुषों और महिलाओं के बीच लोकप्रिय बनाने के लिए आईसीएआर सीआईएफ़टी की योजना के उप योजना के अंतर्गत एक प्रशिक्षण व क्षेत्र निदर्शन कार्यक्रम 1 से 3 दिसंबर 2016 तक उड़ीशा के गंजाम जिले के गोपालगंधा जलाशय के दासेपुर में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में, आईसीएआर-सीआईएफ़टी द्वारा विकसित इनलैंड मत्स्यहरण के लिए फसल निकालने और फसल निकालने के बाद के तरीके जनजातीय कृषकों के समक्ष प्रदर्शित किए गए। उड़ीशा सरकार के मत्स्यपालन विभाग ने इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए लॉजिस्टिक्स सहायता प्रदान की गई और जिसमें 80 मछुवारे पुरुष और महिलाएं उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि श्री आर.एन. मिश्र, असोसिएट प्रोफेसर, मत्स्य महाविद्यालय, रंगेलुंडा, बरहामपुर ने अपने उद्घाटन भाषण में आईसीएआर के तत्वावधान में आईसीएआर-सीआईएफ़टी द्वारा विकसित नए तक्नोलोजी के महत्व पर ज़ोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि आईसीएआर टीएसपी कार्यक्रम के माध्यम से मछुवारों के जीविकोपार्जन में सुधार लाने के लिए सभी प्रयास कर रहे है, और वैज्ञानिकों द्वारा विकसित किसी भी नवीन तक्नोलोजी का मुख्य फायदा मछुवारों को ही मिलता है। उद्घाटन सत्र में उपस्थित अन्य उच्च पदाधिकारियों में प्रधान वैज्ञानिक डॉ. यू श्रीधर, वैज्ञानिक सुश्री जेस्मि डेब्बरमा, आईसीएआर-सीआईएफ़टी से एसीटी ओ श्री बी के प्रधान, उप निदेशक श्री शिब प्रसाद भोई, एफ़एफ़डीए व बीएफ़डीए के जिला मत्स्य अधिकारी व मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री गिरिजा शंकर प्रसाद मिश्र और उड़ीशा सरकार के मत्स्यपालन विभाग के सहायक मत्स्य अधिकारी श्री एन.के. मोहराना आदि थे। श्रीमती संध्या रानी गौड़, अध्यक्ष, माबेहरा पात्र प्राथमिक मछुआरिन सहकारिता समिति (पीएफ़डब्ल्यूसीएस) पीएफ़डब्ल्यूसीएस के सचिव श्रीमती रश्मिता कुमारी साहू भी इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

डॉ. श्रीधर ने अपने भाषण में नए तकनोलोजियों को अपनाने के महत्व के बारे में मछुवारों को बताया। उन्होंने आईसीएआरसीआईएफ़टी के पास उपलब्ध फसल निकालने और फसल निकालने के बाद के विभिन्न तरीकों के बारे में विस्तार से बताया। सुश्री जेस्मी डेब्बरमा ने विभिन्न मत्स्यहरण के बाद की तक्नोलोजियों के बारे में और मूल्य वर्धित उत्पादों के बारे में भी बताई, जिस पर प्रशिक्षण आयोजित की जानी है। इसके अलावा भाग लेने वालों को मछलियों की पौष्टिकता, छोटे बच्चों और किशोरों के विकास के लिए उसके फायदे आदि के बारे में बताकर लोगों को प्रभावित किया। श्री बी प्रधान, एसी टी ओ ने अंग्रेज़ी/ हिन्दी में दिये गए भाषण लोगों के समझने के लिए स्थानीय उड़िया भाषा में अनुवाद किया।

आईसीएआर सीआईएफ़टी द्वारा सुधारे गए तीन तरह के गिल्स नेट, मोडने वाले दो तरह के फंदे और मछली के कटलेट, मछली के आचार, और मछली के पकौड़े आदि बनाने के सभी आवश्यक उपकरण उनके उपयोग के लिए भाग लेने वालों के बीच वितरित किए गए।

तीन दिन के इस कार्यक्रम के दौरान खाद्य के रूप में मछली का महत्व, मत्स्य हरण से लेकर मत्स्य हरण के बाद के विभिन्न स्तरों पर मछली को स्वास्थ्यकर तरीके से हैंडल करना, उत्पाद को तैयार करना, उपभोक्ता के पास थाली में पहुँचने तक उसका भंडारण करना, मछलियाँ खराब होने की वजहें और उसे खराब होने से बचाने के उपाय, विभिन्न मत्स्य उत्पाद जैसे

मछली के आचार, मछली के कटलेट, मछली के पकौड़े आदि और पर्यावरण हितैषी उपकरणों का प्रयोग करना आदि पर व्याख्यान दिये गए। आईसीएआर-सीआईएफ़टी द्वारा विकसित किए गए हार्वेस्ट तकनोलोजी के लिए क्षेत्र निदर्शन व आपसी वार्ता का सत्र आदि आयोजित किए गए। कृषकों के बीच प्रचारित करने के लिए आईसीएआर सीआईएफ़टी द्वारा डिजाईन किए गए और बनाए गए गिलनेट का परीक्षण किया गया। जलाशय की स्थलाकृति के बारे में मछुवारों के साथ जलाशय का सर्वेक्षण भी किया गया। मछुवारों द्वारा उपयोग में लाये जा रहे विभिन्न प्रकार के नौकाओं के विवरण एकत्रित किए गए।

इस कार्यक्रम के दौरान मूल्य वर्धित उत्पाद जैसे मछली के आचार, मछली के कटलेट, मछली के पकौड़े आदि बनाने के लिए प्रशिक्षण दिये गए। समापन के दिन मछुवारों, वैज्ञानिकों और राज्य मत्स्यपालन विभाग के कर्मचारियों के बीच आपसी वार्तालाप सत्र का भी आयोजन किया गया। आपसी वार्तालाप सत्र के दौरान मछुवारों ने कहा कि दिये गए प्रशिक्षण और प्रदर्शित क्षेत्र निदर्शनों से उनके बीच जागरूकता उत्पन्न हुई है। भाग लेने वालों ने प्रशिक्षण के लिए और जनजाति उप योजना उनके गाँव में आरंभ करने के लिए और उनके जीवन यापन के लिए तकनीकी मार्ग निर्देशन देने हेतु आईसीएआर-सीआईएफ़टी को धन्यवाद दिया।

सीआईएफ़टी

वनामी मत्स्य निर्यात विकास के लिए कुंजी: एमपीईडीए

एमपीईडीए के अनुसार भारत के तटीय अक्वाकल्चर प्रणाली में विदेशी श्रिम्प वनामी को शामिल करने से देश से होने वाले समुद्री उत्पाद निर्यात में तेजी को बनाए रखने केलिए वनामी श्रिम्प ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) के अध्यक्ष श्री ए. जयतिलक ने पीटीआई को बताया, "पिछले कुछ वर्षों से भारत से होने वाले समुद्री उत्पाद के निर्यात में काफी तेजी है। वनामी श्रिम्प के क़िस्मों को हमारे तटीय अक्वाकल्चर प्रणाली में शामिल करना निर्यात में होने वाले इस बढ़त का मुख्य कारण था।

2 मुख्य प्रजातियाँ :

उन्होंने आगे कहा, "श्रिम्प के उत्पादन में जैसे जैसे बढ़त हुई है, उसी गति से हमारे निर्यात भी आगे बढ़ा है, और इस समय देश से होने वाले निर्यात का मुख्य मद प्रशीतित श्रिम्प ही है।"

भारत के समुद्री उत्पादन का मुख्य मद प्रशीतित श्रिम्प ही है, जिसे तटीय इलाकों के अक्वाकल्चर फार्मों से प्राप्त किए जाते हैं। भारत के फार्मों में मुख्य रूप से दो प्रजातियों के श्रिम्प की कृषि की जाती है पेसिफिक वाईट लेग श्रिम्प (लिटोपेनेयूस वनामी) और इंडियन ब्लैक टाइगर श्रिम्प (पेनेयूस मोनोडोन)

उन्होंने कहा ब्लैक टाइगर श्रिम्प की कृषि पश्चिम बंगाल, उडीशा और केरल के परंपरागत तालाबों में की जाती है, जबकि विदेशी वनामी प्रजातियों की कृषि आंध्र प्रदेश, गुजरात, तमिलनाडु और उड़ीशा में की जाती है।

भारत ने वर्ष 2015-16 के दौरान 4.09 लाख टन वनामी श्रिम्प का उत्पादन किया है। इस समय वनामी के शावकों को विदेशों से आयात किया जाता है। वनामी शावकों के लिए आयात संगरोध की सुविधा चेन्नई में है और एमपीईडीए के सहायक संस्थान राजीव गांधी सेंटर फॉर अक्वाकल्चर (आरजीसीए) के द्वारा परिचालित किया जाता है।

श्रिम्प के बीज

एमपीईडीए ने कृषकों के लिए उन्नत स्वस्थ्य वाले श्रिम्प के बीजों को विकसित किया है, ताकि फसल की हानि को कम किया जा सके।

उन्होंने आगे कहा, "एमपीईडीए ने तिलापिया, सीबास और मैंग्रोव क्रैब जैसे विभिन्न प्रजातियों के बीज उत्पादन और कृषि के लिए तक्नोलोजी को विकसित किया है। आंध्र प्रदेश, तमिल नाडु, महाराष्ट्र और उड़ीशा ने इन प्रजातियों की कृषि आरंभ कर ली है। एमपीईडीए इस बात से आश्वस्त है कि आने वाले समय में ये प्रजातियाँ देश के निर्यात हेतु उत्पादन में पर्याप्त योगदान देगा।

पुन कहा, "यद्यपि हमने तटीय अक्वाकल्चर के लिए उपयुक्त क्षेत्र के 11% को ही अब तक उपयोग में लाया है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि सरकार अक्वाकल्चर के लिए और अधिक क्षेत्रों की पहचान करके उसे अधिसूचित करेगी, जिससे कि बिना अधिक सामाजिक संघर्ष किए ही उत्पादन को बढ़ाने के लिए कृषकों की काफी समय से लंबित मांग को पूरा कर सकेगा।"

अच्छी मांग

उन्होंने कहा कि "सभी विदेशी बाज़ारों में भारतीय श्रिम्प की बहुत अच्छी मांग है। प्रशीतित श्रिम्प पर वर्तमान में गैर डम्पिंग शुल्क लगने के बावजूद भारत यू एस के बाजार में सबसे अधिक सप्लाई करने वाला देश है।

वाजिब दामों पर भारत से भेजे जाने वाले बड़े साइज़ के श्रिम्प को यू एस के साथ साथ अन्य यूरोपियन राज्यों के खरीदार पसंद करते हैं। भारत जापान और यूरोप को भी प्रशीतित श्रिम्प सप्लाई करने वाला अग्रणी सप्लायर है। पारंपरिक फार्मों से प्राप्त होने वाले ब्लैक टाइगर श्रिम्प के लिए जापान में एक स्थाई बाजार है।

बीजिनेस लाइन

भारत के 68 मत्स्य प्रजातियों में से 47 विनाश के कगार पर

केंद्रीय समुद्री मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान (सीएमएफ़आरआई) द्वारा किए गए इस प्रकार के पहले अध्ययन के अनुसार, पूर्वी तट, विशेषकर उड़ीशा और पश्चिम बंगाल के अधिक से अधिक मत्स्य प्रजातियां जलवायु परिवर्तन के प्रति काफी संवेदनशील है।

यह संवेदनशीलता केवल जलवायु परिवर्तन से ही नहीं, अपितु मत्स्यहरण के दबाव और कम उत्पादन की वजह से भी है।

कुल मिलाकर, अध्ययन किए गए 68 मछलियों के 69% को जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशील पाया गया है। इसमें बोम्बे डक, टूना, शार्क, विभिन्न प्रकार के श्रिम्प, पोंफ्रेट और कटलफिश और अन्य मछलियाँ शामिल है। "पश्चिमी तट में भी मत्स्यन में काफी दबाव है, लेकिन मत्स्य सम्पदा के मामले में ठीक है इसलिए संवेदनशीलता में कुछ कमी है। इस रिपोर्ट के मुख्य लेखक और सीएमएफ़आरआई के वैज्ञानिक डॉ. पी.यू. जकरिया ने ये बातें कही।

टूना, मेकेरेल और सारडीन जैसी मछलियां वास करने वाले स्थान या सतह के पास वाले स्थान के जल, जलवायु परिवर्तन से बहुत अधिक प्रभावित होते हैं; और वे ही पकड़ी जाने वाली मछलियों में प्रमुख भाग है।

16 मत्स्य प्रजातियाँ मत्स्यन की अधिकता के प्रति संवेदनशील है। श्री जकरिया ने कहा "अधिक मत्स्यन के कारण जलवायु के उतार चढ़ाव का अधिक प्रभाव पड़ता है। संवेदनशीलता के कारण प्रजातियों को जलवायु परिवर्तन को अपनाने की उनकी क्षमता प्रभावित होती है। उनके बोयाना विन्यास, भौगोलिक स्थिति और शिकार की उपलब्धता आदि से उनकी संख्या निर्धारित होती है। पश्चिमी तट पर सबसे अधिक दबाव बॉम्बे डक पर, पूर्वी तट में हिल्सा पर और तमिलनाडू में पाई जाने वाली ऑइल सारडीन पर पड़ा है।

मूल्यांकन के लिए सीएमएफ़आरआई ने चार भौगोलिक क्षेत्रों के महत्वपूर्ण मत्स्य प्रजातियों का अध्ययन किया है: उत्तर पश्चिम (गुजरात और महाराष्ट्र शामिल), दक्षिण पूर्व (गोवा कर्नाटक और केरल) दक्षिण पूर्व (तमिल नाडु और आंध्र प्रदेश का एक भाग) और दक्षिण पश्चिम उत्तरी आंध्र प्रदेश, उड़ीशा और पश्चिम बंगाल)।

वैज्ञानिकों ने यह देखा कि किस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र के समुद्री सतह के तापमान में परिवर्तन, समुद्री बहाव और बारिश होता है। 1975 के बाद भारतीय तट के पास समुद्री सतह पर 0.50.8 से.ग्रे तापमान बढ़ा है और सबसे अधिक प्रभाव पश्चिमी तट पर पड़ा है। जो मछली सतह पर या सतह के पास वास करते हैं, वे ही तापमान परिवर्तन से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। पेलाजिक मछली के नाम से ज्ञात ये मछलियाँ, पिछले वर्ष पकड़ी गई मछलियों के 50 से अधिक है, और जिसमें बॉम्बे डक, रिबन फिश, मेकेरेल (बांगड़ा), टूना और सरडीन (तारली) आदि है।

जलवायु परिवर्तन के समान ही महत्वपूर्ण है प्रजातियों की जलवायु के प्रति संवेदनशीलता और उसे अपनाने की क्षमता। क्या वे एक ही तरह के शिकार को भोजन बनाते हैं या उनकी बोयाना की अवधि बढ़ गई है, क्या इसकी संख्या मत्स्यन के कारण पहले से ही दबाव में है आदि प्रत्येक प्रजातियों की जैविक विशेषताएँ के अध्ययन से यह निर्धारित किया है।

बॉम्बे डक, गोल्डन अंचोवी और हिल्सा आदि बहुत ही संवेदनशील है क्योंकि वे एक सीमित भौगोलिक क्षेत्र में वास करते हैं। इसके उलट व्यापक भौगोलिक क्षेत्र में वास करने वाले सीयर फिश (सुरुमई), सारडीन्स और लिजार्ड फिश के जीवित रहने की अधिक संभावना है।

दी टाइम्स ऑफ इंडिया

आईसीएआर-सीआईएफ़टी, कोचीन और हिमाचल प्रदेश सरकार के मत्स्य विभाग के साथ सहमति ज्ञापन पर हस्ताक्षर

केंद्रीय मत्स्यन तकनीकी संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफ़टी), कोच्चि ने हिमाचल प्रदेश सरकार के मत्स्य विभाग के साथ आईसीएआर-सीआईएफ़टी के तकनीकी परामर्श से मत्स्य संसाधन और डिब्बाबंद करने के लिए एक यूनिट के गठन हेतु हिमाचल प्रदेश सरकार के माननीय वन एवं मत्स्यपालन मंत्री श्री ठाकुर सिंह भरमौरी की उपस्थिति में दिनांक 9 जनवरी, 2017 को एक सहमति ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है। इस अवसर को पावन करते हुए श्री ठाकुर सिंह भरमौरी ने ज़ोर देकर कहा कि आईसीएआर-सीआईएफ़टी के वैज्ञानिक अपने वैज्ञानिक खोजों के द्वारा राज्य के मछुवारे समुदाय के बीच उत्साह का माहौल बनाने में अपना योगदान दे रहे हैं और इस सहमति ज्ञापन से हिमाचल प्रदेश के मत्स्यपालन विभाग और आईसीएआर-सीआईएफ़टी के बीच सम्बन्ध सुदृढ़ होगा और मत्स्यपालन के क्षेत्र को और आगे बढ़ायेगा। अपने अध्यक्षीय भाषण में आईसीएआर-सीआईएफ़टी के निदेशक डॉ. सी एन रविशंकर ने इस संस्थान की स्थापना से लेकर अब तक प्राप्त की गई उपलब्धियों के बारे में संक्षेप में बताया और हिमाचल प्रदेश का उदाहरण देते हुए कहा कि देश में मत्स्यन और मत्स्यन के बाद की समस्याओं को दूर करने के लिए अन्य राज्यों के विभागों से भी सहयोग की अपेक्षा की।

हिमाचल प्रदेश सरकार के मत्स्यपालन विभाग के निदेशक श्री गुरुचरण सिंह ने आईसीएआर-सीआईएफ़टी द्वारा हिमाचल प्रदेश के मत्स्य क्षेत्र की स्थिति का पता लगाने के लिए किए गए उचित कार्रवाई और समय पर की गई क्षेत्र सर्वेक्षण की सराहना की और कहा कि इससे इस क्षेत्र के विकास के लिए नीति तैयार करने में उन्हें सहायता मिली है।

मत्स्य संसाधन प्रभाग के मुखिया डॉ. के. अशोक कुमार ने कहा कि सहमति ज्ञापन के अनुसार आईसीएआर सीआईएफ़टी संसाधन यूनिटों के डिजाईन, उपकरणों की खरीद आदि के विवरण प्रदान करेंगे और मत्स्य विभाग के कर्मचारियों और मछुवारों को मत्स्य संसाधन और मूल्य वर्धन के लिए प्रशिक्षण भी प्रदान करेंगे। संसाधन केंद्र गोबिंद सागर, पोंग, सोलन और उना में स्थापित किया जाएगा। इस कार्य को करने के लिए हिमाचल प्रदेश सरकार ने रु. 82.2 लाख की राशि आईसीएआर-सीआईएफ़टी को हस्तांतरित कर दिया है। आईसीएआर-सीआईएफ़टी के प्रधान वैज्ञानिक व कृषि व्यापार इंक्यूबेशन केंद्र के प्रधान अन्वेषक डॉ. जॉर्ज नैनान और हिमाचल प्रदेश के मत्स्यपालन विभाग के निदेशक व वार्डन श्री गुरुचरण सिंह ने श्री ठाकुर सिंह भरमौरी और आईसीएआर-सीआईएफ़टी के निदेशक डॉ. रविशंकर सी.एन. की उपस्थिती में सहमति ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया।

सीआईएफ़टी

श्री गुरुचरण सिंह और डॉ. सी.एन. रविशंकर सहमति ज्ञापन हस्तांतरित करते हुए।

मछुआरे समुदाय की महिलाओं के लिए उन्नत मत्स्य सुखाने के यंत्र पर आईसीएआर केंद्रीय मात्स्यिकी तकनीकी संस्थान, कोच्चि में प्रशिक्षण

भारतीय मत्स्यन जहाज की गुणवत्ता में सुधार और मत्स्यन के बाद के क्षेत्र में इंजिनीयरी दखल पर संस्थान के अनुसंधान परियोजना के भाग के रूप में आईसीएआर-सीआईएफ़टी, कोच्चि, नेटफिश, एमपीईडीए और एडीसी व स्वयं सहायता दल, आलप्पुष़ा द्वारा मछुआरे समुदाय के महिलाओं के लिए दिनांक 8 से 9 दिसंबर, 2016 तक आईसीएआर-सीआईएफ़टी, कोच्चि में "उन्नत मत्स्य सुखाने के यंत्र" पर एक दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। एडीसी व स्वयं सहायता दल, आलपुष़ा की 25 महिलायें प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित रहीं। आईसीएआर-सीआईएफ़टी के निदेशक डॉ. सी.एन. रविशंकर ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इंजीनियरी विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज पी. सैमुएल ने उपस्थितों का स्वागत किया और नेटफिश, एमपीईडीए के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री जोईस वी. थॉमस और एडीसी के संयुक्त निदेशक फादर निक्सी व स्वयं सहायता दल, आलप्पुष़ा ने बधाई संदेश दिये। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एस. आशालता ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

"उन्नत मत्स्य सुखाने के यंत्र" पर तकनीकी सत्र का संचालन डॉ. मनोज पी. सैमुएल ने किया डॉ. आशा लता ने महिला संचालित उद्यमः मत्स्य के क्षेत्र में समस्याएँ और संभावनाएं विषय पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. ए.ए. जैनुद्दीन, प्रधान वैज्ञानिक ने "मत्स्य सुखाना और पूर्व संसाधन कार्यकलाप" के सैद्धान्तिक पक्ष के प्रशिक्षण का संचालन किया जबकि श्रीमती वी.ए. मिनिमोल, वैज्ञानिक ने उसी विषय पर प्रयोगिक सत्र को संचालित किया। आईसीएआर-सीआईएफ़टी के सौर ऊर्जा से मत्स्य सुखाने के यंत्र का प्रयोग करके मत्स्य सुखाने की तकनीक का मुख्य प्रायोगिक सत्र का आयोजन डॉ. एस. मुरली, वैज्ञानिक ने किया। डॉ. सी.ओ. मोहन, वैज्ञानिक ने "सूखे मछली की पैकिंग" विषय पर कक्षा का संचालन किया। मछुआरे महिलाओं के समूह में सूखे मछली के उत्पादन पर व्यापारिक मॉडल पर एक कक्षा का संचालन आईसीएआर-सीआईएफ़टी के कृषि व्यापार इन्क्यूबेशन केंद्र के व्यापार प्रबन्धक सुश्री एलिज़ाबेथ ने किया। प्रतिभागियों ने आईसीएआर-सीआईएफ़टी के विभिन्न प्रयोगशालाओं, प्रमुख संयंत्रों और एबीआई का भी दौरा किया। ईआईएस के विभाग प्रमुख डॉ. ए.के. मोहंती समापन सत्र में मुख्य अतिथि रहे।

सीआईएफ़टी

प्रयोगिक सत्र चलाते हुए

समुद्री सूचना से संबन्धित एप्लिकेशन मछुआरों के बीच काफी लोकप्रिय

एम कृषि@फिशरीस (mKRUSHI@fisheries) नामक मोबाइल सलाहकार सेवा के प्रति कृषकों के बीच काफी लोकप्रियता है, क्योंकि इस एप्लिकेशन से मत्स्य कृषि कार्यकलापों के खर्च में कमी आई है और इससे मत्स्यन में सुधार लाने में मछुआरों को सहायता भी मिल रहा है। इस मोबाइल सलहकार सेवा की तक्नोलोजी को केंद्रीय समुद्री मत्स्यकी अनुसंधान संस्थान (सीएमएफ़आरआई) के मुंबई स्थित अनुसंधान संस्थान ने विकसित किया है और उसे समुद्री सूचना सेवाओं के लिए भारतीय राष्ट्रीय केंद्र (आई एन सी ओ आई एस) के साथ टाटा कन्सल्टेन्सी सर्विसेस (टी सी एस) द्वारा राष्ट्रीय कृषि नवीनता परियोजना (एनएआईपी) के अंतर्गत अमल में लाया गया है। महाराष्ट्र के

13 मछुआरे समुदायों के बीच सीएमएफ़आरआई द्वारा किए गए अध्ययन से यह देखने में आया है कि इस मोबाइल एप्लिकेशन की सहायता से मछुआरे ईंधन की खपत में 30% तक बचत कर सकते हैं। ईंधन की इस बचत से पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव में भी लाभ होगा, क्योंकि यह आकलन किया गया है कि विश्व में उत्पादित ईंधन के 1.2% मत्स्य हरण पर ही खर्च होता है।

किए गए अध्ययन से यह भी पता चला है कि इस एप्लिकेशन से मछुआरों के जीविकोपार्जन में भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। अधिक से अधिक मत्स्य पकड़ने के साथ साथ यह एप्लिकेशन उन्हें समुद्र में सुरक्षा भी प्रदान करता है। यह एप्लिकेशन आई एन सी ओ आई एस द्वारा प्रदान किए जाने वाले संभाव्य मत्स्यन क्षेत्र (पीएफ़ज़ेड), समुद्र के सतह का तापमान, जलवायु और फाइटोप्लांकेटोन की उपस्थिति की जानकारी मिलती है, नोवा (एनओएए) और भारतीय उपग्रहों से प्राप्त जानकारी के अनुसार इसकी उपस्थिति से कई मत्स्य प्रजातियों को भोजन मिलता है। यह इन एप्लीकेशनों को समेकित करता है और स्थानीय भाषा में सलाह देता है, और साथ ही साथ प्रयोग करने में आसान जावा और एंड्रोइड मोबाइल फोन आइकॉन भी देता है।

सीएमएफ़आरआई ने महाराष्ट्र में 56 मछुआरे समुदायों में इन सेवाओं को पहले ही लागू कर चुका है। सीएमएफ़आरआई के मुंबई स्थित अनुसंधान केंद्र के प्रभारी वैज्ञानिक वी वी सिंह ने कहा कि मछुआरे मत्स्यन की अपनी गतिविधियों के लिए इस एप्लिकेशन का व्यापक रूप से प्रयोग कर रहे हैं। संभावित मत्स्य उपलब्ध क्षेत्र की सूचना उपलब्ध होने से मछुआरों को बेकार की यात्रा और उससे होने वाले डीजल के खर्च, बर्फ और श्रम को कम करने में मदद मिलती है। उन्होंने आगे कहा कि यह एप्लिकेशन मछुआरों को हवा की गति, और दिशा, लहरों की ऊंचाई आदि की जानकारी रंगों की कोड बैंड से देती है और उन्हें समुद्र के असुरक्षित क्षेत्रों को पहचानने के लिए भी सहायता देती है।

बिजिनेस लाईन

समुद्री खाद्य क्षेत्र का सरकार से आग्रह-ताजा पानी और खारा पानी को अक्वाकल्चर के लिए मुक्त करें

समुद्री खाद्य उद्योग ने सरकार से आग्रह किया है कि ताजा पानी और खारा पानी के क्षेत्रों को नीली क्रांति के लक्ष्य प्राप्त करने के लिए संगठित अक्वाकल्चर गतिविधियों के वास्ते खोल कर दें।

वेस्ट कोस्ट ग्रूप, जो पूरी तरह से एकीकृत अक्वाकल्चर और समुद्री खाद्य कंपनी है, के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री कमलेश गुप्ता ने कहा कि देश के 4.5 मिलियन हेक्टायर ताजा पानी के स्रोत में संभावित सम्पदा भरे पड़े हैं, और साथ ही साथ भारत में लगभग 11 लाख हेक्टयर खारा पानी क्षेत्र श्रिम्प कृषि के लिए उपलब्ध है, जिसमें से केवल 8.5% या 1 लाख हेक्टयर जल क्षेत्र को ही कृषि के अंतर्गत लाया गया है। इस प्रकार भारी मात्रा में उत्पादन करने की संभावना है।

यदि उचित उपाय किया जाये तो भारत अपनी बृहत संसाधनों की वजह से समुद्री खाद्य के उत्पादन में प्रथम स्थान पर पहुँचने की पूरी संभावना है।

भारतीय मत्स्य और अक्वाकल्चर क्षेत्र वैश्विक उत्पादन में से 6% से अधिक का उत्पादन करती है और सकल घरेलू उत्पाद का 1 से अधिक और कृषि सकल उत्पाद का 5% मत्स्य क्षेत्र से ही आता है और 14 मिलियन लोगों को रोजगार भी उपलब्ध कराता है।

उन्होंने आगे कहा "कि देश में गैर सरकारी क्षेत्र के बहुत से खिलाड़ी है, जो अक्वाकल्चर और मत्स्यपालन क्षेत्र में रुचि रखते हैं। लेकिन अक्वा फार्मों का रखरखाव, समुद्री उत्पादों का संसाधन और प्रशीतन को बनाए रखने में होने वाले पूंजी लागत से होने वाले लाभ की कमी बहुतों को इन क्षेत्रों से दूर रखा है। सरकार को चाहिए कि इस क्षेत्र में लगने वाले कर में कुछ समय के लिए छूट प्रदान करें।

उन्होंने पुनः कहा "समुद्री उत्पाद संसाधन और प्रशीतन के अनुरक्षण में कर में छूट होने चाहिए। इस प्रकार के प्रोत्साहन से प्रचालन के खर्चों में कमी आएगी और इससे समुद्री खाद्य के मूल्य भी कम होगा।"

मत्स्यन और अक्वाकल्चर को कृषि की तरह कुछ लाभ प्राप्त होने चाहिए। कृषि मंत्रालय के परिवीक्षाधीन होने के कारण इस क्षेत्र में ऐसा नहीं हो रहा है। इसलिए मत्स्य क्षेत्र के लिए एक अलग मंत्रालय होने चाहिए।

बिजिनेस लाईन

टोकियो के प्रसिद्ध सुकीजी नव वर्ष मत्स्य नीलामी में विशाल टूना 500,000 पाउंड में बिका

टोकिओ के प्रसिद्ध सुकीजी मछली बाजार में पिछले नव वर्ष की नीलामी में जो कुछ हुआ वह काफी आश्चर्यजनक था, एक धनी रेस्तरां मालिक ने एक विशाल टूना को प्राप्त करने के लिए 500,000 से अधिक पाउंड का भुगतान किया है।

विश्व का सबसे विशाल मछली बाजार को 2020 में होने वाले ओलिंपिक्स के लिए आवश्यक सड़क के निर्माण के वास्ते पिछले वर्ष नवंबर में वहाँ से हटाया जाना था, लेकिन पर्यावरण की समस्याओं के कारण उसमें विलंब हो गया।

72 मिलियन येन से जीती गई टूना के साथ कियोशी किमुराः अफ़्लो/रेक्स/शटरस्टॉक

इस विलंब से सुकीजी में एक और नव वर्ष नीलामी आयोजित किया जा सका, और इस नीलामी को शुभ माना जा रहा है और नीलामी जीतने वाले को कुछ प्रचार मिल जाता है।

लगातार पिछले छह वर्ष से कियोशी कीमुरा, कियोमुरा कॉर्प के अध्यक्ष, जो सुशी जिनमाइ रेस्तोरां शृंखला के मालिक भी है, ने 210 किलोग्राम के पेसिफिक ब्लू फिन टूना, एक ऐसी प्रजाति, जिसे विशेषज्ञ अधिक मत्स्यन के कारण लुप्त होने की चेतावनी दे रहे हैं, को नीलामी में 72 मिलियन येन (504,000 पाउंड) अदा करके हासिल किया है।

यह रकम पिछले वर्ष की जीत की रकम 14 मिलियन येन से अधिक ही है, लेकिन 2013 में अदा किए गए 155 मिलियन येन की रिकॉर्ड के आधे के बराबर है।

नीलामी के जीत के बाद श्री किमुरा एक तलवारनुमा छुरा लेकर उत्तरी जापान के समुद्र से पकडी गई उस विशाल गहरे चाँदी जैसे मछली के पास खडे रहा।

टोकियो सरकार टोकियो बे के समीप प्रतिष्ठित गिंजा शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के पास स्थित प्रमुख अचल संपत्ति से 80 वर्ष पुराने सुकीजी बाजार को 2 कि मी (1.24 मील) दूर स्थित टोयोसु नामक मानव निर्मित द्वीप पर हटाना चाहती है।

लेकिन प्रस्तावित नए स्थान पर जहरीले प्रदूषण की वजह से इस योजना में विलंब हो गया, क्योंकि उस स्थान पर पहले एक गैस संयंत्र स्थित था।

टोकियो सरकार ने 15 वर्ष पहले इस स्थान बदली का निर्णय लिया था, इसलिए नए स्थान का पर्यावरण परीक्षण के परिणाम सप्ताहों के भीतर प्राप्त करने की उम्मीद की जा रही है।

इस विलंब ने मत्स्य विक्रेताओं, जो इस बदली का विरोध कर रहे थे, को अधर में लटका दिया है।

एक आढ़ती नोबुयुकी ओकी ने कहा "अब हम संदेह की स्थिति में हैं।" हम उम्मीद करते हैं कि नए वर्ष में नए स्थान की सुरक्षा के बारे में निर्णय हो जाएगा, और संदेह को दूर करेगा।

सुशी का राजा माना जाने वाला ब्लू फिन टूना के बारे में भी दृष्टिकोण अनिश्चित है।

सुशी के लिए वैश्विक बुभुक्षा ने इस प्रजाति की संख्या को खतरनाक ढंग से कम कर दिया है। जुलाई में पूरा किए गए वैज्ञानिक आकलन यह दर्शाता है कि पेसेफिक ब्लू फिन की संख्या उनकी वास्तविक संख्या से केवल 2.6% ही रह गया है।

दी पी चैरिटिबिल ट्रस्ट में ग्लोबल टूना कंसर्वेशन के निदेशक अमन्डा निक्सन ने कहा "वैज्ञानिकों के अनुसार टूना के बने रहने की संख्या के मुक़ाबले तीन गुना दर से इनका मत्स्यहरण किया जा रहा है।

पी और कोई एक दर्जन अन्य पर्यावरण दल ने इस प्रजाति के व्यावसायिक रूप से पकड़ने पर रोक लगाने की मांग की है।

दी टेलिग्राफ

पदोन्नति

- डॉ. ए.एस. उपाध्याय, उप निदेशक (अक्वा), एमपीईडीए (ईआईसी में प्रतिनियुक्ति पर) को संयुक्त निदेशक के रूप में पदोन्नत किया गया है।

स्थानांतरण

- डॉ. एस. कंडन, उप निदेशक (अक्वा), एमपीईडीए क्षेत्रीय केंद्र, विजयवाड़ा को निदेशक के रूप में आर जी सी ए में स्थानांतरित कर दिया गया है।
- श्रीमती शेरली आरबी, वरिष्ठ आशुलिपिक, एमपीईडीए को मुख्यालय कार्यालय से एमपीईडीए के क्षेत्रीय केंद्र विजयवाड़ा में स्थानांतरित कर दिया गया है।

सेवा निवृत्तियाँ

- डॉ डी मणिकुमार, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी (अक्वा) 26 वर्ष और 8 माह की सेवा पूरा करके सेवानिवृत्ति की आयु होने पर सेवा निवृत्त हो गया है।
- श्री पौलोस के एक्स, वरिष्ठ आशुलिपिक 30 वर्ष और 6 माह की सेवा पूरा करके सेवानिवृत्ति की आयु होने पर सेवा निवृत्त हो गया है।

सदस्यता आदेश / नवीकरण फार्म

कृपया एमपीईडीए न्यूज लेटर के सदस्य के रूप में मुझे/हमें नामांकित करें। एक वर्ष की सदस्यता शुल्क के रूप में सचिव, एमपीईडीए के नाम एरणाकुलम, केरल में भुगतान हेतु रु. 480/- के मूल्य का चेक/ मांग ड्राफ्ट सं. ..... दिनांक ..... इसके साथ संलग्न है।

कृपया पत्रिका निम्न पते पर भिजवायें।

.....

.....

दूरभाष सं.: ..... फैक्स : .....

ई-मेल : .....

विवरण के लिए कृपया संपर्क करें :

संपादक, एमपीईडीए न्यूज़ लेटर, एमपीईडीए हाउस, पनम्पिल्ली नगर, कोच्चि-682 036

दूरभाष : 2311979, 2321722 फ़ैक्स 91-484-2312812/ ई-मेल : newslet@mpeda.gov.in

PRAWN FEED

VANNAMEI FEED

BLACK TIGER SHRIMP FEED

BLACK TIGER SHRIMP FEED

IN COLLABORATION WITH:
THAI UNION FEEDMILL CO., LTD.,
Thailand.

AVANTI FEEDS LIMITED

In the business of quality Prawn feed and Prawn Exports

An ISO 9001: 2008 Certified Company

Aiding sustainability & reliability to Aquaculture

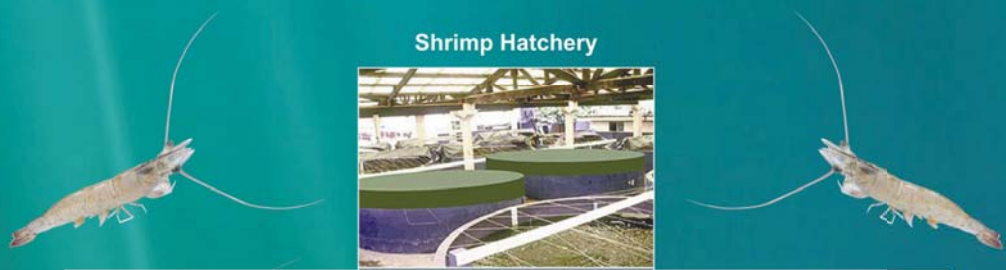

Shrimp Hatchery

Feed Plant - Gujarat

Prawn Feed & Fish Feed

Prawn Processing & Exports

INNOVATIVE - SCIENTIFICALLY FORMULATED - PROVEN

- GREATER APPETITE
- HEALTHY & FASTER GROWTH
- LOW FCR WITH HIGHER RETURNS
- FRIENDLY WATER QUALITY

AVANT AQUA HEALTH CARE PRODUCTS

AVANTI A.H.C.P. RANGE

Avant Miner Mate — Chelated Trace Mineral Supplement	Avant Saldo Mixtos — Marine Mineral	Avant D-Flow — Water Quality Improver	Avant Pro W — Soil & Water Probiotic
Avant Bact — Gut Probiotic	Avant AmmoniAbsorb — Ammonia Absorber	Avant Life — Oxy-Generator	Avant Immupak — Immunity Enhancer

Corporate Office: **Avanti Feeds Limited**
G-2, Concord Apartments 6-3-658, Somajiguda, Hyderabad - 500 082, India.
Ph: 040-2331 0260 / 61 Fax: 040-2331 1604. Web: www.avantifeeds.com

Regd. Office: **Avanti Feeds Limited.**
H.No.: 3, Plot No.: 3, Baymount, Rushikonda, Visakhapatnam - 530 045, Andhra Pradesh.

Innovative safeguards against complex risk

At Integro, we understand the risks involved with Seafood. We are committed to simple solutions to complex risks through our expertise.

Protect yourself with bespoke Rejection/Transit Insurance solutions from Integro Insurance Brokers.

Contact us to experience our expertise:
Raja Chandnani
Phone: **+44 20 74446320**
Email: **Raja.Chandnani@integrogroup.com**
www.Integrouk.com

INTEGRO UK
INSURANCE BROKERS